# प्रकाशकीय

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट रो आ एक उद्देश्य रयो है के राजस्थान अर राजस्थानी री पुराणी अर नवी रचनावां रो प्रकाशन करायो जावै। इणी उद्देश्य नै पूरो करण सारू आ रचना पाठकां रे आगे राखतां मनै घणो हरख हुय रयो है।

चन्द्रदान चारण,
प्रकाशन मंत्री,
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट,
बीकानेर।

# प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा रो प्राचीन गद्य साहित्य घणो समृद्ध है। अर्वाचीन काल में भी राजस्थानी में गद्य रा आछा-आछा लेखक मौजूद है। पण आधुनिक शैली रा उपन्यासां रो राजस्थानी में नितान्त अभाव है। आज सूं कोई चालीस पैंताळीस वर्ष पैली राजस्थानी साहित्य रा समर्थ लेखक श्री शिवचन्द्र जी 'कनक-सुन्दर' नाव सूं एक उपन्यास प्रकाशित करायो हो, पण उण रो मात्र प्रथम भाग हीज प्रकाशित हुयो और इण तरां राजस्थानी साहित्य री आ महत्त्वपूर्ण रचना अधूरी हीज रही। इण उपन्यास री शैली आधुनिक उपन्यासां री शैली सू घणी भिन्न ही।

मरुधियाजी पछै, म्हारी जाणकारी है जठै तांई, उपन्यास लिखण रो प्रयास राजस्थानी में नहीं हुयो। इण वास्तै भाई श्रीलालजी जोशी रो इण दिशा में ओ प्रयत्न देखनै घणो हरख हुयो।

जोशीजी मातृभाषा राजस्थानी रा एक अनुरागी ने खरी लगनवाला लेखक है। मातृभाषा रै भंडारनै रीतो देखनै आपनै घणी वेदना हुवै। मातृभाषा रै इण अंगनै सर्वथा उपेक्षित देखनै आप ओ काम खुद आपरै माथै ओटियो है।

जोशीजी रो उपन्यास रै क्षेत्र में ओ प्रथम प्रयास है। साथै ई राजस्थानी भाषा में आधुनिक शैली रो प्रथम उपन्यास होण रै कारण वर्णाँ नै सगळा रस्तो नू वें सिरै सूं पखाणणो पड़ियो है। मार्ग-दर्शन सारू परंपरा रो आसरो क्याँ नै प्राप्त नहीं हुवो। पण फेर भी लेखक आपरै उद्देश्य में पूरै अंश में सफल हुवो है इण में कोई शक नहीं।

उपन्यास सामाजिक है। राजस्थानी विधवा री समस्या लेयनै इणरी रचना हुयी है। रूढ़िग्रस्त राजस्थानी समाज रा चित्र उपस्थित करण में लेखक नै आछी सफळता मिळी है। लेखक री सब सूं बडी सफळता उपन्यास री भाषा है। उपन्यास री भाषा बोलचाल री, प्रवाहपूर्ण और मुहावरेदार है। भाषा माथै इसो अधिकार आधुनिक राजस्थानी रा घणा थोड़ा लेखकाँ में देखण में आवै है।

लेखक लोकाँ नू वो मारग दिखायो है जिण माथै राजस्थानी भाषा-भाषी सदा उण रा आभारी रैसी। आशा है राजस्थानी रा नू वा लेखक जोशीजी रै दिखायोड़ै इण मारग नै अपणावैला और मातृभाषा रै इण घणै अपेक्षित अंग री पूर्ति करण सारू तत्पर होयनै आगै आवैला।

महाराणा भूपाल कालेज,
उदयपुर।

नरोत्तमदास स्वामी,
एम ए., विद्यामहोदधि।

# प्राक्कथन

श्री श्रीलाल नथमलजी जोशी का उपन्यास "आभै पटकी" राजस्थानी भाषा में लिखा हुआ प्रथम उपन्यास है और भाषा के कारण इस पुस्तक का एक विशेष महत्व है। राजस्थानी (डिंगल) भाषा-साहित्य का भारतीय साहित्य में अन्यतम गौरव-स्थान है, और आधुनिक राजस्थान में राजस्थानी भाषा के कवियों का इतिहा नहीं यद्यपि शिक्षा एवं साहित्य तथा राजनीति और राष्ट्र-परिचालना आदि जीवन के सब क्षेत्रों में हिन्दी ही अब राजस्थान में सुप्रतिष्ठित हो गई है। राजस्थान के लोगों में अभी तक अपनी भाषा और उसके साहित्य के सम्बन्ध में एक स्वाभाविक अभिमान और प्रेम सदा जागृत है, और श्रीलाल नथमलजी की प्रस्तुत पुस्तक इस अभिमान और प्रेम का प्रमाण है। राजस्थान की भाषा साहित्य, इतिहास तथा संस्कृति के अनुशीलन के लिए बीकानेर में 'सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टिट्यूट' कई वर्षों से काम कर रही है। इस गवेषणात्मक संस्था की ओर से हिन्दी तथा राजस्थानी में पुस्तकों के प्रकाशन के लिये व्यवस्था की गई है। यह सरस राजस्थानी भाषा का उपन्यास विशेष समीचीनता के साथ इन्स्टिट्यूट के

टाबरपणै सूं ई राजस्थानी रै विदेवां रा मांय सुणतो आयो हूं — स्व० सूर्यकरणजी पारीक श्री नरोत्तमदासजी स्वामी अर ठाकुर रामसिंहजी तंवर। अै मांय सदेई मनै राजस्थानी सानी खैंचता रैया, पण फेर भी श्री मुरलीधरजी री ई कोई-कोई रचनावां मनै टाबरपणै में पढ़ण नै मिळी जिकां सूं मनै राजस्थानी में लिखण री प्रेरणा हुवी। हूं आं सगळां विद्वानां सारू आभार प्रगट करूं हूं। श्री अगरचन्दजी नाहटा अर श्री भक्तचन्द्रजी शर्मा रो भी हूं आभारी हूं जिका म्हारी समे-समै साज-सभाळ लेवता रैया है। बाबू जगन्नाथप्रसादजी शर्मा सारू भी हूं आभार प्रगट करणो चाऊं हूं।

इण पोथी नै टाबर रो पगलिया करणो जाण'र विद्वान म्हारी लाचारी नै ध्यान में राख'र मनै भौंव-भौंव री बोदूणों सारू क्षमा करसी, जो मनै भरोसो है।

केसर प्रकाशनालय
सानगिरी रो कूगा
बीकानेर।

श्रीलाल नथमलजी जोशी

पूज्य पिताजी री
याद में

सुख-दुख ना कोई राटी बाटी री। माथे री फूल गुलाबी री आगा काम्म
पाप बंधगी। हमी खुसी कठैई गयी। अधगैला हुवै ज्यूं सेठजी दीसण
लागग्या। कदेई कदेई ताव-तप चढ़तो जणै तो इयां डर लागतो के
सेठजी री हूंगा डूबण आळ्ये दीसे। सेठजी घणोई खाया-कमाया,
संसार रो सुख देख्यो, अबै जे मोक्ष मीच सो आवै तो किसी सौंगर
सूनी हुवे। पण बापड़ी किसना दुनिया में आय'र कांई कर्यो ? गोरो
निखार डील प्यासे बिना नैण गोळ मटोळ हाथ लाल लाल होट राता
राता नख। परणी नै दो ई बरस हुया'र अबै हरोचन्द दगो देग्या।
पैसाई साल तो पीरै ई रैयो अब के छिंदो बोदड़ो सासरे आवण
लागी पण तिजो बार सासरे आयी, एकबार पैरूं ओढी पण्णा भर पोती
दूसरी बार पैरे'र ओ आयी भी। हरोचन्द कने सूं तो बीने रुपिया
परसो चढ़तो कानी। बाप घणो साहूकार हो। बा बण ठण र रैवती
जिण सूं पाड़ास री लुगायां नै तो इसा बैम हा के न्हावती बख्त पाणी
में दो च्यार सोरठ्यां सैंट छाबती हुसी। कारण उण रै कानां में अन्तर
फुलेल रा फवा नई हुवणे पर भी डील री अनोखी मैक आवती
रैवती। माथे में बीणा गूंथ कारण में तो इसी पत्तर के पछै टांकड़े
गम्बी री आडी आजो लुगायां नूण लातर गरज करती। किसना दिन
में तीन बार माथा बांधती पण लुगायां सोचती के एकबार बाधोड़ा
बस इमा जम्याड़ा पड़्या है।

हरोचन्द रै औरत किसना में दुनिया री हरेक फैसन अपणायण
रा अधिकार हा पण अबै बात और है। किसना रै बाप कनै समाज

कुण कहावै ? जे भो काम सरू हुयोड़ो हु जावो तो हूं ई
मेड़ां मेळी मेड़ हुय जांवतो।

सुधारक — इण काम में कळक रो टीको नइ जस रो तिलक
निकळसी आप समझदार हो, कमर कसलो, आप
समाज नै रस्तो देखाल्यो।

दे०—थे कैवो जिकी बात हूं आछी तरै समझग्यो पण हूं अबार
थांई को कैय सकूं नी। अबकाळ् या राम राम आप पधार सको।

सु०—अबार नइ तो फेर हाजर हुवां ?

दे०—अबार म कोई अबार जारो छोडो म्हारो हाथ जाई थानै।

सु —आप नाराज ना हुवो म्हां आपनै गाळ तो काढी कोनी।

दे०—थे म्हारै सिर आंख्यां माथै हो मालक सा, परसम्यां रा टाबर
हो। गाळ् यां थे एक नई सौ काढलो, मनै रोस कोनी, पण
समाज रा बंधण म्हारै सूं टूटै कोनी।

सुधारक 'जै राम जी री' कर'र घर पाछा टुरग्या। धीरै धीरै
बात्यां करता जांवता हा। किसना रो भाई भीतस्याम घर में ई हो
पण सुधारकां री बात्यां सुण नइ सक्यो। जद देवी दयाल जी सूं
मालम पड़ी तो लाल-पीळा हुयग्यो आंख्यां सूं आगी बरसण लागगी
डांग लेय'र घर सूं निकळण लागो—सुधारकां रा खप्पर खोलण नै।
देवी दयाल जी समझायो—बटा अबार आपां रै बोलण री जगत
कोनी। लोग कैवै ज्यूं सुण लेवणो। माथै ऊपर तो काळो पाप है अर
लोगां सूं लड़ता आपां चोखा लागां। कदेई मौको लागसी जणे आपेई

सामने काच में सेठजी आपरो मूंडो देख्यो। फेर किसना सामो जोयो। अरे! कठै अमावस रो अंधारो अर कठै पूनम री चानणी। ई हिरणी रो हिरण ना हुवै, कै'र सेठजी री आंखी भरीजगी। झर्मा झर्मां ने चक्कर आवण लागग्यो। सगळ्ये जिनस्यां घूमती दीसण लागगी। भींत रा सायेरो लियो, नई तो धरै न धरै अजोग हुजावतो। सेठजी धीरे धीरे आपरे मौज में गया। 'साठे बुध नाठे' री कैवत सेठजी रे सामने साकार हुय'र झूमगी। सेठजी बाप बाप'र पसताया, अरे हूं किसे रस्ते टुरग्यो? सांवरिये साथ रख्यो, नई तो आग्ये मूंडो हुवण में कांई घटतो? जिनसां में जोवण जोगो का रैवतोनी। मूंडै री बत्तीसी आवै सारी जैर लागी। बत्तीसी तोड़ नांखी अरसो फोड़ नांख्यो टुकड़ा टुकड़ा कर दिया। माथो धो धोवाय'र धोय्ये कर्यो, बटदार मूछ्यां तो फेर झर्यां सूं बात।

पिलंग ऊपर सोय तो गया पण नींद कैने आंवती कणीई ई पसवाड़ै कणीई बी पसवाड़ै। रात कटणो भोली हुवगी, घड़ी खोटी हुय भू बतायी सूइयो सिरकै ई नइ। रामायण रै सरणै गया। रामायण तो कल्पवृक्ष है, हरेक चीज देवै। सेठजी नै झट ई नींद आयगी। दुनिया में नींद नई हुवती तो आदमी में कित्ता फोड़ा पड़ता? कई आदमी तो नींद नै जीवण रो चोबीस में लागग्या है, पण नींद ने खोव र दुख, असान्ती बैर, लाय अर किरीई चीजां ने चोइमूं घंटा माथो लगायण खातर मूना रखणो है। सेठ जी सगळ्ये दुख दुख भूलग्या अर नींद रै गुटकै में असुध हुयग्या। दिमूगे सात बजी आंख खुली तो आवळै मांय सूं उमीद निकळगया। सेठ जी किसनानै देखण खातर कई दिनों देखी एक जोली किताब री सायता सूं एक चिट्ठी

कोई एक मिनट रो ई मोड़ो को करैनी, पण भो मूंछ्यां री दम्मर साफ करै कोनी आयो। अब के आवै वणे मूंछ्यां साफ कर'र आए।

पाछणो पीढी सूं पकारवो पकारवो नाई बोल्यो — "सेठ साब गई तो एक बार बँगला पड़ा घँटया किया जिको म्हारे बाप बोसा सूं छूट्यो अर आप दिन भर भूखा रैवो। ए मूंछ मूंडा सूं तो कैसी- बाप तो जीवै है, कैरै वारे मूं कांई है मूंछ ? अर फेर कैने ठा कांई कांई करै ?

सेठ सबै बोलै आयै—मूंछ्यां आम्ब पचराइग्योड़ै नैणां आम्ब बोला सेठ जी पौड़सूं पढा आयै रै सिवाय, मूंछ्या मसारह मोखसो रे बस्यो अर मूंडै मे बत्तीसी रामण लागग्या। ये जे साच पूछो, तो वेळी सूं निरा सावळ दीसण लागग्या।

अबै सेठजी इसो मौको जोवता हा जिण रै कारण इस्यो सोग रख्यो। पण जोवै जिण नै मौको भी मिल जावै। रात री दस साढी दस बजी ही। घर आखा सगळ्या सोग्या। मे छांट री मौसम ही डागळै ऊपर घूमता घूमता सेठ जी किसना रै कमरै पाखी गया परा- किसना पिलंग ऊपर सूती ही, सिराणै पासी टेबल पड्यो पड़्यो हो जिण सूं केसां री लट्यां बळ खा र अबरा कमल माथै भंवरावै ज्यूं मूंडै ऊपर आंवती ही। मोती फरफर उड़ती जिके सूं पल्लो आयो पाछो हुयोड़ो हो। सिणगार नई हुवतै थकां भी रामचन्द्रजी नै किसना सरग लोक री देवी दीसी। किसना सूं बेसी फूटरी कोई और कांई हुसी ? पण इस्यो हुवतै थकां भी सेठ जी रै चेरै ऊपर उदासी रो असर साफ साफ दीस्यो, जाणे कोई जोड़ो अंडरा हुयोड़ी हिरणी काळजै री चोट खाय पड़ी हुवै।

सगळा माल घोटण री त्यारी में लागग्या।

किसना आज दिनूगै जीमी कोनी। रसोइयो पूछण नै आयो, तो कैयो 'भूख कोनी'। जद पूछ्यो थोड़ासाक दाळ भात ले आऊं, तो कैयो पेट दुखै। सेठजी री चिट्ठी तो किसना आज दिनूगै देखी पण उण रै सिवाय गळी गवाड़ रा पटिया मिनख डाक सूं भी किसना नै कई बार प्रेम पतर भेज दैवता। वै आगद तो किसना देखतै ई फाड़ नांखती, फेर भी हरेक चिट्ठी सूं हिरदै नै इसी चोट पूगती कै वा आंसुवां री झड़ी लगायै बिना नईं रैवती। आज सुसरैजी री चिट्ठी बांची—

"प्राण प्यारी किसना राणी,

एकला रैवां सूं थारो जीवण सूनो म्हारो जीवण सूनो। जे एक बार म्हारै गोडै सूं गोडा भिड़ाय र बैठ जावै, तो हूं जीवतो सरग आ्ड़ परो ।

थारै हुकमै री उडीक में

दास।"

सुसरैजी रा आखर किसना सावळ ओळखती ही। मन में पक्को भरोसो हुयग्यो कै ओ आगद सेठजी सिवाय और कई रो को हुय सकै नीं भर नीचै सेठजी रो नांव भी लिखाड़ो हो। किसना री समझ में बठीसी, आखै मूंढ पर मिजाज री बात थबै आपरी करै आपणी। गेरै विचार में पड़गी—"एक विधवा नै सापत्र जीवण रो ई अधिकार कोनी। *सिणगार गया, मजाक गया, कपड़ा गया, गहणा गया,* दो रोटी खाय र हूं जूण पूरी करूं जिकै भी दुनियां नै बरदास कोनी। मनै

इसी दुनिया में रैय'र करणो ई कांई है ? म्हारा माप ! थे मनै दुख दिरावण नै क्यूं छोड़ग्या, थांरै कनै बुलाम्यो कमी ? थे म्हारो किसो काढ़ राखता ! कदेई आंख आडी ई को हुवण दी नी आज हूं आयज गाय दई मिन्न-मिन्न करूं । धरती तूं फाट जा, मनै ठौड़ दे । कपड़ा आंसुवां सूं आला गार हुयग्या । आंख्यां पूछ'र उठी पावडेट रो अधियो लायी । कमरै रा बारणा बन्द किया । ईरीमन्न रो फोटू गोदी में धर लियो । टीका ऊपर, मायै सूं पगां तई मास छेक ढोल लियो, तूड़ां री पेटी उठायी । तूली काढ'र सिलगावण लागी, पण तूली टूटगी । दूसरी तूली काढ'र जगावण लागी, तो मीत ऊपर निजर गयी । एक गरी माथै लिख्योड़ो—

'उंतावळ में कोई काम नईं करणो ।'

४

सेठजी परमार तो इकलगन रुपियां रो बोल्यो पण आवै किसी मान-गियानी ही । मोता-मीता तो हा ई, भायलां-पापेलां सगळां नै न्यूंता दरियो । पूड़ियां बढणा माळा म्यारा हलवाई म्यारा, दाळ पीसण वाळयां म्यारी, बरतण मांजण वाळा म्यारा, कई छोटी-मोटी बात रो जोमक हुवै ज्यूं पेस पैर हुयगो । रसोई बणगी जीमण री टैम

नइ, तो जिया तरै मिनख पैदा हुया है ज्यूं ही तरै लुगायां पैदा हुयी है, ऊपर सूं पड़योड़ा कोई कोनी। फेर कांई कारण है के लुगायां ने मिनखां रै बराबर आजादी सूं रैवण रो अधिकार नईं !

पदम – थे ठाळ नई टाबर हो बकवास बड़ ई करी है। हूं परणीज्यो अर थांरो जनम ई को हुयोनी। म्हैं लुगायां ने आंख आंख सूं देखी है। म्हारै सूं कोई तिरिया-चरित्र छानो कोनी। एक आंख सूं आंसू बरसावै अर दूजोड़ी सूं लोगां ने सैन करै। पल में खिलखिला'र हंसै जिणसूं पेट दुखण लाग जावै अर पल में इसो विलाप करै जाणे आफत घोर हुयी है।

प्रदीप – अनुभव तो आप रो बेसी है।

पदम – म्हैं म्हारी आपरी लुगाई ने कई बार परखी है। अबार तो महीनों सूं म्हारो रुजगार छूटग्यो जणै लुगाई आंख ई फेर ली। जे हूं मांग लेऊं, तो पनै दूकते पाछे रुपिये-पइसे खातर नट जावै। अर म्हैं ई सोच लियो के जदै आपां भी रुजगार लाग्यूं हुयो सूं रुपिये ने सोच समझ'र ई राखणो। नोकरी छूटयां पछै लुगाई ऊपर सूं तो पैली जिसी ई मीठी बोलै अर हूं भी कांई फरक को देखाऊं भी पण प्रदीप साब। मांय सूं फाट्योड़ा है, अमल में एक कोनी।

प्रदीप – पण पदम जी कोई आप संजोग कांई बात हुयगी जिके थे पदम हुय'र मन मार लियो, जदै दूसरा आदमी

हो जासी के वे, जे परसन नई हुवै तो आपरै मर्यो मे विसाक वे सकै है।

थोड़ी ताळ तो सगळा चुप रैया, फेर एक पदडतजी बोल्या—वकील साब, म तो आ सोचता हुतो के कोई किस पास हुयां सूं संका घट जेसी पण हूं तो मू के आयोड़ी बात पेट में को राखूं नी। जे ओ पास हुयग्यो, तो धरम रो नास हो जासी समाज काळी धार हूब जासी।

वकील – समाज किंयां डूब जासी, नारी-जगत रो तो इण सूं बडो भारी उपगार हुसी। पगां में किचरीजती नारी उठ' र ऊँची जासी।

पडत – वकील साब लुगायां मे मावे पढायोड़ी आछी कोनी। आंनै जे पग हेटै राखसो तो आंख्यां मानसी, अर थोड़सी'क ढीला दीवी नी अर ऐ फट थोड़ी किन्नी रह कठै री कठै गयी नी। लुगाई री जात ई मीच है, मह तो तुळसीदास जी लुगायां री इत्तो कदवी क्यूं करता। वी महातमा रै कोई लुगयां सूं वांद थोड़ी ई ही।

वकील – माफ करीजो पडतजी, मे हूं एक सवाल पूछूं—आप नीच जात सूं पैदा हुयोड़ा हो कांई ?

पंडत – वकील साब, आ कवेड़ी मई है, मनै नीच जात सूं पैदा हुयेड़ो आप किया तरै केवो ?

वकील – आप मी नारी सूं पैदा हुयेड़ा हो आपरी मां भी तो नारी है। जे नारी जगत री जात नीच है, तो आप री मां भी नीच जात है, अर आप नीच जात सूं पैदा हुयेड़ा हो। अर

आड़ा हरयोड़ा हा। लोगां ने सीमांवती बगत सेठ जी सफा मूजस्या के वां को परसाद कांई कारण बोल्यो। अबे बात आयो। एक ठण्डी उवासी ली, धीरे धीरे किसना रे कमरे पासी गया बारणा बन्द। गळ्यो भरीजग्यो -बेटी ए बेटी, किसना बेटी बारणो खोल, (नीचे सुर में) जे थारे बूढ़े बाप रो कांई कसूर हुयग्यो है तो तू माफ कर बेटी, परमात्मा री सौगन, फेर इसी गळती कदेई को हुवेली। किसना बारणो खोल दियो, नीव पासी मूंडो फेर'र ऊमगी। सेठ जी कैयो तू दिनूगै री भूखी है, मने अबार ठा पडी, हूं पुरसाव'र मेलूं हूं, जीम ले। सेठ जी आप्रे मेजाय दी किसना थाळी रास ली, नोकर ने कैयो जीम'र हेटे मेल देसूं थाळी।

सेठ जी सौगन तो खाय्ली पण फेर भी किसना इण घटना ने गुपत राखणी ठीक नइ समझी। एक विचार तो करयो के बापू सा (दूजी दमाद जी) ने कैऊं, पण फेर देख्यो के तो थारी ई म्हारे दुख में बळ'र भोभो हुवे ज्यूं हुवा है, ने इसी बात री ठा पड़सी तो कैने ठा कांई हाल हुसी? ने कदास इसी बात सुण'र चित भरम हुय जावे तो घर रा रैवे न घाट रा। फेर किसना रै सामने आपरे भाई श्रीवल्लभ रो ध्यान आयो पण उणने कैणयो भी बेकार बतायो, कारण उणने कैणां सूं देवोदयालजी ने मालम पड़यां बिना नइ रैवे, घर भी वल्लभ रो सुभाव भी इसो अकरो के आव गिणे न ताव, मरणा-मारण ने त्यार रैवे। जे हाथापाई कर बैठे तो एक मारत हुय जावे। ठोडी रै हाथ दिए, आड़ी आँख्यां सूं सामळी बारी पासी, किसना झाक बोकरी।

अर कियो कारण बो कदैई कई काम री ना नईं करतो, पण अब देख्यो के बीनणी आगै छोटा लागसू, इण कारण सरमायोड़ो घरे कैये बिना ई गाडी चढ़ग्या। घर में तड़फड़ियो मचग्यो। एक हफ्ते सूं कागद आयो 'हूं जैपर में राजी खुशी हूं कोई बात रो सोच फिकर मत करीजो। इण कारण अबै किसना रो जेठ जी नै काम मोकळ्यो सौगन सरूप ई समझती।

सीताराम नै तो किसना बजार काम भी नईं मोकळती कारण सीताराम नै कोई सौदो लावण खातर जे पइसा देय देवै तो फेर सीताराम रो जीव बस में नईं रैवै पइसा देवण आळा नजीक पाक्को सीताराम आखर-फरक में लगाय देसी। लगावै तो कमाई खातर ई है, पण जे आखर लगै नईं, इण में सीताराम रो कांई रो कांई कसूर ! बजार आळा रामचन्द्र जी रो बेटो समझ'र सौदो उधार देय देवै, पइसा नईं मिलै तो केई दिन तो नजीक राखै पण अब बिना मांगे पइसा देवण री नीयत नईं दीसै जणै दुकानदार आगै सूं देखै तो ई हलो मार देवै—कंवर साप ! पइसा तो आया नी हाल तई ! कंवर साब आपरी आदत रै माफक एक दा देखे में तो सुणाई करै नईं। दुकानदार भी फेर गम राखै नईं, भवई थारे सगळै बजार नै सुणा'र हलो करै—कंवर साब ! दो दो महना हुयग्या हाल पइसा को आया नी ? पण कंवर साहब री छाती नै कळदार है, रीस रती भर नईं करै हँसता हँसता कैय देवै—दो महना ई हुया, दो बरस तो को हुया नी ? इयां कैय'र राम लीला मे नकलीया हँसै ज्यूं चार ओर सूं हँसण लाग जासी अर आगै टुर जासी।

किसना रै सामनै आपरै जेठ सीताराम रो ध्यान आयो कै जे ठगी मैं को सगळी चिट्ठी-पतरी री बात्यां कैऊ तो कांई परबन्ध कर सकै पण जेठजी तो बेठजी हा। ना तो दुकान रै काम काज में समझता ना दुकान में बैठता। दिनूगे न्हाय धोय जीम जूट'र बारै निकळ जांवता। अठीनै वठीनै घूम आंवता रस्तै में मिलतो जिकै सूं कूड़ा साचा तमासा कर लेंवता। बजार री हवा खा आंवता, छापै-रेडियै री खबरयां सेभांवता, परै आय'र जीम लेंवता। घर में टाबरां आतर कोई चीज बस्त चाईजै तो चाईज बोकरो। ले लुगाई आवण रो कैसी ता एक दो बार में तो सुणी अणसुणी, करसी अर जे धणो बार कैसी तो तमासां में पाड देसी—अरे सी, म्हारै सू जे में पड़ी है, कायली, हूं तो मूळई ग्यो इणी वेर।

जीम जूट'र सेठजी कनै बैठ जासी। धणी सीधी गप सड़ासी अर सेठजी रो रूख देख र हाथ करयो मोंग लेसी जिण सूं बाईस कोप देल'र रात नै एक बजी परै आसी। जे किसना जेठजी नै परियाद करती तो सुवाई सो पबायत करता पण जेठजी रो दिन भर री हालाडोलो देख र किसना री समझ में को आयो मी कै जेठजी नै कैऊ पण कसी कैऊ। किसना जेठजी रै रंग ढंग सूं मी वाकब ही। बाणनै ठा ही कै जठजी सबेरै सेठजी कनै हाथ खर्च सारू हाथ मांडै अर जन्मी रा आपी दरजण टावर सेठजी पाडै इण कारण सेठजी रै मिजाज बाबत री धीमन जेठजी मैं हुयगी इणी ईं आसी ही जिका समदर में रैव र मगरमच्छ सूं वैर करणो। सीताराम नै एक बार आनै भी किसना कोई काम भोळायो जिण रा दंगारो हा सीताराम

भर लियो कारण वो कदई कई काम री ना नईं करतो, पण जद देख्यो कै बीनणी आगै आछो लागसूं, इण कारण सरमायोड़ो घरे कैय दिना ई गाडी चढग्या। घर में सळवळिया मचग्यो। एक हफ्ते सूं कारड आयो 'हूं ऊंपर में राजी खुसी हूं कांई बात रा साच फिकर मत करीजो। इण कारण अबै विमला तो जेठ जी नै काम आछ्यणो सीधन सरूप ई समझती।

सीताराम नै तो किसमत बजार काम भी नईं मल्योवती कारण सीताराम नै कांई सारा कागण घावर जे पइसा दय दवै तो फेर सीताराम रा जीव बस में नइ रैवे पइसा देयण आम्म बठीक बाकरा सीताराम आसर-फरक में लगाय देसी। लगावै तो कमाई आवर ई है, पण जे आवर कोनी नइ, इण म सीताराम रा कांई रा कांई कसूर ? बजार आख्य रामचन्द जी रो बटा समझ'र सौदो उधार देय देवे, पइसा नइ मिलै तो कई दिन ता बठीक राखै पण जद बिना मांग पइसा देवण री नीयत नईं दीसे जणै दुकानदार आगै सूं इसे तो ई इसो मार देवे—कंवर साब ! पइसा को आया नीं हाल नईं ! कंवर साब आपरी आदत रै माफक एक वा देखे न वो सुणाई करे नइ। दुकानदार भी फर गम राखै नइ जबड़े धारै सगळै बजार नै सुणा र इसो कहै—कंवर साब ! दो दो महना टुगग्या हाल पइसा को आया नी ? पण कंवर साहब री छाती नै कसरदार है, रीस रत्ती भर नई करै हँसते हँसते कैय देवै—दो महना ई हुया, दा बरस तो को हुयासी ? इयां कैय'र राम सीता में नख्सीड़ो रैवे ज्यूं चोर आर सूं हंसण लाग जासी, अर आगै टुर जासी।

सीता राम कनै घरे बगारा आगे जिका भी किसना सूं बणना नई रैवै। मांगता पइसा तो कूवै मैं पड़ग्या सीताराम फकत बागड़ग्यूं'र बाटे आळै कनै खाटो सिपारी आळै कनै सिपारी, फेर उधार लेव लेसी। चौथे को आवै तो कनेवेकी हुवणने, पण आवै कूवे को हुव'र। किसना सेवाराम नै सामना स्नावर मार तो पचापच करयो पण अब भेठजी रो मरवाना समान याद आयो तो फेर मठीमणी भारा सम होवगी।

एक साफ दिल री छोरी जिण रै सातर रूप एक महान वैरी साबत हुय रयो है अर इण लड़की री सायता करणै आळो दुनियां में कोई नई भ्यारां पाळी न मारो, बोर न मारो कठैई आसा री पुचकी किरण ई दीसै नई। किसना रै सामने फेर वा सैन आयी—"अंधारघुप्प में कोई काम नईं करयो।" पण अबै वा सैन किसना नै फगत् लागी, 'ठेरगी, सोच लियो ई दुनियां में म्हारो कोई आपनी तो फेर हूं कैरै सावर जीवती रैऊं। हूं फगत् ठेरो नई तो सचार तक मैं को ईसो वह'र कठैई जांवतो। हारयोड़ी किसना पिलंग ऊपर गुड़गी। आंख्यां मार सूं भीज्योड़ी ही सीस री लगती तूटोड़ी ही।

किसना री आंख्यां तो मीच्योड़ी ही, पण इयां लागता कांई दूरी ऊपर दियो बळै है। मरयोड़ै सरीर में कोई भाजा रियां सूं लागणी बापरी हुवै ज्यूं ठा पड़ी। किसना रो देवर, बखियां कुसरै रो मरो, जिका मम्बाई मैं डाक्टरी री पढाई करतो हो, किसना रै ध्यान में आयो। उण रो नांव मोहन लाल। मोहन नै रामचन्द्रजी पाळ पाळ'र बड़ो करयो अर आपरै बेटे जिसा समझता। किसना

सोच्यो—मोवन लाल जी तो पढाई में लागोड़ा है, म्हारी बात ऊपर ध्यान देवण नै बांनै फुरसत हुसी' क नई, पण जे टैम निकळगी तो वे म्हारी सायता जरूर करसी। इण तरै सोचती सोचती, अलमारी मांय सूं मोवन लाल रो एक फोटू काढ्यो—डगडगाट करता नैण, जिण नै देखतै ई ठा पड़ै कै भी सफस हुसियार है। बड़ो सारो लिलाड़ इण बात री साख भरै कै इण में विचार-सगती री कमी नईं। चवड़ा कांधा लम्बा हाथ गोरो रंग लम्बो कद, पण चेरै सूं नमरता टुळकी हुवै ज्यूं लखावै। मोवन रै फोटू नै किसना घणी बड़ी वार देखै अर धीरै सामनै मुळकै, जाणै भी कोई सांचेई आदमी है जिको पाछो मुळकसी।

किसना मोवन नै चिट्ठी लिखण रो विचार तो कर लियो पण मन में डरै कै इण चिट्ठी रो कोई उल्टो अरथ नईं काढ लेवै। हुसी जिकी दीखी जासी। किसना एक कागद आयो फौन्टन पेनलियो फेर विचार में पड़गी, सम्बोधन किंयां करूं, देवर लिखूं क जेठ, कारण हरीचन्द अर मोवन दोनूं सांपना हा। थोड़ी देर आयो झाले बैठी रैयी फेर चिट्ठी सरू करी—

मोवन जी,

सादर आमें ठा को हुसी नी कै एक नार विपदा में कोई कांइ चोड़ा पड़ै। हूं विस्तार में तो बताणो नई चाऊं पण इत्तो लिखणो जरूरी समझूं कै म्हारै अनै आपरै मिनखां री अनेक चिट्ठयां आवै जिण में थ्यां रै सायै प्रेम करणै रो न्यूतो हुवै। आं चिट्ठयां सूं इत्तो दुख मन लागै जिको घर में रैवण आळां री इण तरै री चिट्ठयां आयां सूं

पढ़्यी कठैई मासी परी अस्त्रत पहसी तो अंग्रेजी में एग्रीमेन्ट बात कर सकी, अर इसी बडू पार्वां सूं ओबय सुकी रैवी मोवन सापना करता। पण बारे महना मायापोड़ो करतो पर भी तीजां ने आ ठा नई पड़ी के क्रिताब' में खोनी ह रो माथा लागे अ बडी है रो। अर मोमन पूछतो के हाथ लई इती कमजोर क्रिया तो सिमयत करती, 'म्हारे सूं मास्टरनी-पास्टरनी कने को पढीजे नी। के पे पढावो अर हूं सोस'र वेगी हुसियार नई हुय जाऊं, तो प मने मतई अबे रसूं केम दिया।

मोवन इण बात ने सावस समझतो हो के पयी कने सूं बडू सापर ई पढ सके। फेर तीजां री सऊम सूरत भी इसी मद के पढावण रो जी करे। गाँव बडा बडा अर दोनां मैं थोड़ा पढियोड़ा जिण सूं बने बैठे जिके रा माफ बरखूं मूं भर जावे। घर में बैठी बात करे जिकी तीजे घर सुणीजे। मौसा सूं आगू च आवे मैं पोथ्या बेस मोपन ने बात असरता। कपड़ा मोपन पोटे सूं पोसा लाय र बंबतो पण अर तीजां पैरती तो कपड़ो सार्वां मरण लाग बांवतो। मोवन रो हीर पण बांवतो। आं सगळी पात्यां सूं भी मोपन रो इतो हीर नई पडतो जितो तीजां रे मूंगसे मसार सूं।

तीजा ने सावस सिखणो नई आवे तो कांई हुयो, जिसना री चिट्ठी पोचणी तो आवण लागगी। जिसमा री चिट्ठी रो एक एक आखर कालजै में हीर पई गुमम्यो। हाँ, और आवमो तो देपे प्रेम री चिट्ठियां तने अर तू दवे म्हारे पखो में। हूं थानां री लखर सब सरसूं। मोगमा पूगा है थांरा!

दिन भर तो तीजां किसना री चिट्ठी नै घोटी फेर पाडोसण फूलां नै देखाली । फूलां सबा री कै आज पारटी हुवै जदै सगळां रे सामने आ चिट्ठी देखाळै । तीजां आ ई करी । कालेज रा छोकरा छोकरियां अर गुरु आप आपरे घरे जावण लागर ऊभा हुयां'र आ तीजां गेठ में मूतणी दई बिखरियोड़ै केसां, अर सळां भरीज्योड़ै मैले कपड़ां बैठक में घुसगी। मोहन रै हाथ में चिट्ठी झलायी—लो सा, आ थांरै चिट्ठी आयी है । सगळा तीजां नै देख'र चकराया । सोच्यो हुसी—आ कुण है, इयां अणचेती क्यूं बिच में क्यूं आई । पण मोहन चिट्ठी री बात ऊपर री ऊपर बताय'र सगळां नै विदा कर्‌या । तीजां रै सूगलै रैणसैण, ओछै रंग रूप अर माड़ै सऊर रै कारण मोहन सगळां नै आ ई कैया करतो कै म्हारी लुगाई पड़दो राखै । मोहन सोच्यो, अरे जे तीजां एक मिन्ट ठैर'र मनै चिट्ठी देय देंवती तो कीरो कांई बिगड़तो हो, सगळां रै सामनै इसै ओछै ढंग सूं बणरी आवणो इण सूं बेसी अखर्‌यो । फूलां नै देखो कर्‌यो, तीजां रो सऊर बखाण्यो, जद फूलां कैवण लागगी—हाल टाबर पणो है, समाज मोळ्यो है । धीरे धीरे आपेई सगळो आस्यां सीख जासी ।

मोहन तो सोच्यो कै हूं तीजां नै फटकार सूं पण तीजां रै आपरै पढ़ी लागगी ही—म्हारै सूं तो कदेई एक मिन्ट ई बात करण नै बेगा को आवे नी, अर कालेज री गुड़गुड़ियां अल्हैला करता फेर फेर भागवण्यां दई गावे अर ओसतां रा मटरका करै जदै थांमे रात री इग्यारै इग्यारै बजी तई नींद को आवैनी । हूं ज सिमसा पढ़ी बतळासूं

तो ई इसो मिस कर लेवो जाणे साचेई नींद आयगी । म्हारे सूं तो चौगठे ली थे बात्यां को देखोगे नी । इत्तां कैंवती कैंवती तीजां आंख्यां भर लायी ओर जोर सूं रोवण लागगी सू पटो ई लगाव दियो । फूला पाछो पसटूयो—म्हने तीजां में तो मूनणी बड़गी दीसे । आ बात सुणी जणै तीजां नै ठा पड़ी कै हूं सूतणो पड़ियोड़ी हुवे ज्यूं दीखण लागगी दीसूं तो आंबे फेर मोयन नै ताव क्यूं नी लगाऊं । तव्यात सास'र पड़गो । मोहन भी आ ढंग देख'र डरग्यो । डाक्टरी री पढाई तो करतो हो पण इसा मामला को होनी । नाड़ देखी घोड़े दड़ दोड़ती ही । पाणी रो गिलास लायो तीजां फ्यास देखी फेंक दी । आप रा हिरणा हिरणा हुयग्या । फेर कैयो—मरे हूं तो दूध पीसूं रवड़ी खासूं । अबे फूलां पाछी सूतणी बरप री—देखो नइ जणै आ तो पाणी ई को मांगे नी, आज रात में आम्या हुयां बिना इत्तां चोड़ो ई करे । आप ई किणो दुख पावे है । गम्यो दू पीबो पीसे आपण रो । मोहन गरीबदास हुवे ज्यूं करनै ऊभो, कि कर्तव्य विमूढ़ वांई कह कांई नई । तीजां आंख्यां रा कोइया फेर'र सिसकवी बोली मैं किया हूं तो हरजूकी नाकणा हूं, अबवर सूं आयी हूं तीजां नै लेय र जासूं । आ लांग देख गयी रा केई आदमी घर में आग्या । फूलां झाड़ागर नै बुलावण नै गयी । झाड़ागर तो कोई न कोई गुरगो जोयवो ई हो—लाल चोळो लाल पछेवड़ो, लांबा केस, लांबी दाढ़ी बड़ी बड़ी आंख्यां भरमी री भार । सब फूलां लारे झाड़ागरजी आयग्या । आवने देखता ई बोल्यो बठै आ रे को डाकिणा क्यूं आया है तूं ? बोलो बालो आप बतो नई तो झाड़ा देवणा मूठ मारेलो ।

बाई री बात सुण'र अण बगत तो बाळ गोठणी घोरी ई हुयी, पण अब सावेंई बाई हुग्गी, तीजां फेर तो मोवन री मां नै ब्याव री बात याद दिरायी। मोवन री मां सगाई तो करदी, पण ब्याव री इसी उतावळ नई ही। तीजां रे दादोजी बूढा हा अर पोतो गियो, पोतो गियो तीजां पछ ई ही रोव री बात। दादैजी देख्यो जे तीजां रा हाथ पीळा म्हारै करां थका हुय जावै तो रणी निकळ जावै। इण कारण अब मोवन दस बरसां रो हो जद बगत इण गुई गुड़ा रो ब्याव हुग्यो। इत्तो वेगो ब्याव हुयणे पर भी मोवन डाक्टरी री पढाई करली, जो कोई माईतां रो पुन समझणा चाइजे नई तो हरौं तो इसो है के ब्याव हुयो अर भणरणो छोडियो।

दिन जम्यो तो तीजां में हरखूबी नामण त्यार। नव रो आलोगड़ो हुयो अर केसू आयग्यो मोवन रै कालेज रो भायलो—बोलण में चरपरो फूटरा-फरो आंख्यां में चतराई भर्योड़ी। सायद तीजां में मूरखणी री बात सुण'र ई आज इण टैम आयो। मोवन सूं बात चीत करी। मोवन नै आप'र दुखी देख्यो, अर बोल्यो—'पैसा मायता जे छाड़े-छराटे में इतने पइसा लगायो है तो बचे जितो लाभ, अर जे तीजां नै ठीक करायणी है, तो हूं बिना टकै पइसे कर देसूं, तूं चुपचाप देख बोकर।' मोवन सोच्यो ईसूं बेसी और कांई चाइजे।

मोवन तीजां अर केसू तीना तीन घर में हा। बारणो बन्ध कर दियो।

केसू—मोरम तीजां में मूरखो है ना तो सगळां नै ई दीखे है पण अठै मरभाई सैर में किणी लुगाई में मूरखणी बढ़ जावै, उणनै

ऊंची लटक्यां'र नाक मैं सिरक्यां रो धूंओ देवै बठै सूं तीन मील ऊपर एक मूर्तां रो बाड़ो है बठै लेबावणी पड़सी। बठै समस्यां पड़े तो एक मिन्ट रो काम है। ऊंची लटकाणा मैं बोत तकलीफ हुसी। नई तो म्हारै कनै तो इसो बाड़ो है कै बठै लेजावण री जरूरत ई कोनी। तीसरो बाड़ो देवत है

*मूनखी मोसी मांय सूं भायेई भाग जासी।*

मोवन – कणै तूं ई बाड़ो देय दे जिका ठीक रैसी।

कमू – क्यूं हरसुखी मोसी मांय सूं जासी'क नई ?

आ बात सुण'र तीनां इसा हाथ माथ देखांकिया कानै हरसुखी मोसी मांय सूं भाजी परी। कमू एक बाड़ा दियो जण हाथ करणा छोड़ दिया दूसरे बाड़े मैं माथो ढक लियो अर तीसरे बाड़े मैं धूंघटो काढ'र बैठगी। जे तीनां में सांचई मूनखी हुवती, अर बीनै कठावण लायर मावन रा हजार रपिया लाग जांवता तो वयानै इत्तो दुख कोनी हुंवतो नी जित्ता वोनां रै इण माथ मचावण सूं हुयो। "सुगाव्यां इयांई करै" मावन नै धीरैसी'क कैंवतै कैंवतै कैसू गयो परो।

८

मोवन आपरै कमरे मैं आय'र आराम कुरसी मायै पड़ग्यो— किसना ! थारो चिट्ठी है अरे चांदू है, मनापार बांचत ई मापन फाटग्या

लागग्यो । डील सूनो हुग्यो चिट्ठी आँख्यां सामी तो ही पण आँख्यां आगे धुंधळास आयग्यो लिख्योड़ो कांई है, कांई नईं, दीसणो बन्द । मोहन राजी हुयो– चोखो ई हुयो कै म्हारी निजर गयी परी, नईं तो फेर औ समाचार बांचीज जावता । पण धुंधळास तो पल-दो सिकण्ड रा हो फेर चिट्ठी रो एक एक आखर साफ साफ दीसण लागग्यो । मोहन घबरायो, कै एक विधवा अरदास करी है जिको वीरां नै बरदास नईं हुयी, आ किस्यां'क लुगाई है । किसना घोर संकट में है, मनै बीरो संकट टाळण खातर जी-जान सू कोसीस करणी चाइजै ।

वीरां री मूरखी अर किसना री चिट्ठी सू मोहन नै इत्तो धक्को पौंच्यो कै माथो हुळण लागग्यो, ताव चढग्यो । वीरां जीम ऊठ'र आपरी मासी रै घरे जांवती परी, जिन में दवायी पाणी रा चोखा पड़ै तो पण बोल्यो । फूलां कणीई कणीई पाणी रो लोटो सराण देवती । मोहन नै पूछ्यो—वीरां कठै गयी ?

मोहन – आपरी मासी रै ।

फूलां – इसै ताव में एकला छोड'र ? लुगाई है'क कोई सांग है ?

मोहन – ना फूलां बाई क्यूं आदमी नै पूरी आजादी है क्यूं तरै लुगायां भी आजाद है । मासी रै घरे जावणो म्हारे ताव में रोको करण सू ऐसी जरूरी समझै है तो बीनै कोई रोक टोक कोनी ।

फूलां – हूं तो म्हारे धणी रै मा नै पूछे बिना एक बार अम्मा देवी रा दरसण करण नै गयी परी जिके में ई पाछी आंवते ई बैरयां र लाजा सगळी सूंत नांखी । ये तो मिनख कांई देवता हो ।

रेखा रा वो ढाढा आयम्भर हा ।

बाबोजी—आ बेटी हाव सावण सूं धो'र आ ।

किसना ने आयी आयी आंधवी देख'र उणरी मोआई मीना भी साथै आयगी । बाबैजी कैयो 'बटी, हूं तीन दिन रा भूखा हूं परसूं बिनूं दूध पियो छिम्या ने कोई नई । आज एक भगत दो सेर कच्चो दूध ला आयो पण वो वोरै कपड़े सूं ढाय'र लायो, इण खातर वो दूध म्हारे काम नई आयो वो पाछो लेजग्यो । भगत कैवा वो फेर

किसना—बाबाजी एक मिन्ट ठेर जाओ । (फेर मीना ने कैयो)
बाबैजी खातर आपांरी गाय दूय'र दो सेर दूध रखाय दो।
बिहारी ने कैय दियो बदराई री पूरी समाल राखै ।
(फेर बाबैजी ने)—हां म्हाराज !

बाबोजी—भगत कैयो तो फेर हूं कोई सेवा करूं अब म्हैं सेर भर काचो मिसरी भर हा सेर दाख्यां मगाली जिके म्हारे करने है थे परसाद लेवो ।

मीना अर किसना दोनां ने बाबैजी थप थप परसाद दियो । मीना परसाद लेय'र गयी परी । बाबैजी कैयो 'बटी अबार कच्चोड़ो हूं दूध पीय'र थारो हाथ देख सूं । मनै हाथ देखणो चोखो घोखो आवै । रजवाड़ां रा राजा मनै सगळा गुर मान मू पूजै, अर सगळा ई चावै के हूं वांरै ई अठै थम'र रैय जाऊं । वै सामोड़ा मठ बणायग्या ने त्यार है, पण साधू हुया पछै फेर माया में किसो फसूं । जे अबार अलवर म्हाराज नै ठा पड़ जावै तो मनै मोटर भज'र बुलवाय लै पण

बठो, रूळक ने तो आकार बीतग ई आखो लागे।

पर आगे आप दिन साधू पड़दाव लगावे वठां री बात किसना सत सांचली के भे कूड़ा है, पण बावेजी रै मुख-मंडळ अर पूजनीक ऊमर सूं इतो तेज दुळ्यो हो कै जे बाबोजी कैय देवता – हूं भगवान हूं तो ई किसना मान लेती ही। थोड़ी ताळ में दूध रांधर आयग्या अर बाबाजी एक ई घोट में ऊंधायग्या। ढाढी मूंछां पूंछी कुरता करूंण, बाबो पसवाड़ो बाळ्यो आंख लागगी। नींद टूटी तो देवी दयालजी, भीमराम किसना मीणा पाड़ पाड़ोसी बावेजी रै सामने हाथ जोड़े बैठ्या हा। देवी दयालजी री रतवायां में पोल ही इण कारण वठे बावेजी ने रावाळो कने मो दो-तीन बार देख्योड़ा हा आज देवी दयालजी रा धन भाग बाबोजी घरे पधारया। आदर सत्कार में फेर कमी क्यूं रैवती ही?

किसना सुभाग्य ही जिका दिनां में देवो दयालजी साधू सन्ता रा बैरी पड़्या हा। समाज भी इण सूं आधा मरतो हो। जे साग में लूण तीखो हुयग्यो तो रसोइये ने गाळ बिना दूजी बात नईं, जे मिरच बेसी पड़गी तो थाळी फैंक देवता—अरे म्हारो तो काळजो बळग्यो। दूध पीवती वगत दूध में आंगळी घाल र देखता जे आंगळी बीळे नईं हुवती तो गिलास गुड़काय देवता। नोकर चाकर काम काज मे ढील कर देवतो तो चाबक-हंटर पटक देवता। सामी जे घर आगी ठम आंवतो तो भीतरली दर करता—अरे काळ लाग'र सोड हुयो है, उठो क्यूं होवेनी पाड़े से जिण मगतां अर बणाग्या बाबोजी! भाग भाग। इण कारण एक बार दूकयोड़ो साधू दूजे इणां रे बारणे नईं

फड़कतो। पण मनै तो रात दिन रो फरक हुग्यो। पैली जे उणरो
तेल जिसो सभाव हो तो मनै बरफ जिसो समझो। बीमारी री साव
बिलकुल मिटगी। एक दिन नोकर दही में खांड रै भरोसै लूणकी भर र
लूण रलाय दियो। देवी दयालजी चाख्यो तो खारो लाग्यो। साग सूं
फलको खाय लियो फेर दही री कटोरी पाणी सूं भर'र लूण
समेत पीयग्या, कारण बैंठ भी नई मांगता। साधू सन्तां सूं पैली बैर
हो जितोई मनै प्यार हुग्यो, खास कर'र आवे जिके भूखो नई जावे।
फेर म्हात्माजी री तो बात ई न्यारी ही। बाबाजी री आव भगत करी, आवे
रै सी चवाया पेथड़ियो, पुरस चढाया कंदोल कर'र चरणां में
पड़ग्या। एक सौ एक रुपिया भेट करया पण महाराज हाथ पाछो कर
दियो—सेठ हूँ रुपियां रो लोभी नई, थारै प्रेम सूं हूँ बीत राजी हूं
भगवान थनै सुखी राखे।

जद देवी दयालजी नै कोई आ आसीस देवतो तो झट किसना
आली बात चोवती—'म्हारो सुख तो पूरो हुग्या, मनै भरयां सूं सुख
मलेई हुवो। आज भी सेठां री मोंक्यां बराबर भरोसगी। आली
काठी कर'र कैवो "बाबाजी और तो सगळो आप री दया है, पण
कोई म्हारलै पाप रो खोटो लागग्यो जिण सूं" इत्ता कैवतै ई गळो
भरीजग्यो आगे बोलीज्यो नई, किसना मालो हाथ कर दियो।
बाबोजी भी समझग्या। इतो ताक बाबोजी किसना नै सुभागण ई
समझता हा इसी सरल सभाव री फूटरी छोरी नै बिधवा सुण र
तो एक बार बाबोजी भी पर मरनी आम्मे बड़ गंभीर हुग्या।
एक दो मिन्ट सगळा चुपचाप बैठ रैया। फेर बाबोजी कैयो-'भगवान

आगै तो जोर जोमी, करै जिकी सिर माथै धरणो ई पड़ै। मौना मसख फटाफट लागगी, उठ'र गयी परी।

बाबोजी किसना रो हाथ देखण लागा तो कमरो घूमण लागग्यो, फेर बीजको हाथ देख्यो तो सागी ई बात। बाबोजी राजा महाराजावां रा भारी भारी हुयार देखता, पण आज हिम्मत को पड़ीनी। हाथ जोड़ दिया- 'भला था सेठ, हाथ कांई देखणो है' आंनै समझ्यो ठा तो है ई। पण बाबेजी नै एकाएक दुरता देख र श्रीवल्लभ कैयो 'महाराज आप झटपट दुरण लागग्या, इसी कांई बात है, बतावो तो सरी।' बाबोजी सेठ नै बोल्या 'और तो हूं कांई नइं कैय सकूं पण हूं जे थारा रो हाथ बीचणो रैयो अर पाछो अठै आयो तो तू कैसी- 'महाराज हूं घरण सुखी हूं।' किसना री उमर रेखा सासा बड़ी है।' कैंवते कैंवते महाराज रस्तो लियो। फेर पाछा मुड़'र कैयो- 'थे म्हारो भरोसो नइं हुवै अर तू आकर फरक लगावतो हुवै तो सुण, आज आठो आसी।' श्रीवल्लभ आठै ऊपर पहरा लगाय दिया, आठो आयो पण फेर भी देवी दयाल की रै आ बात समझ में नइं आवी कै किसना री उमर रेखा बाधा बड़ी है, अर हूं सरण सुखी हूं।

किसना रो चित परसन रैवै इण बात रो सगळा ध्यान राखता। जद किसना धीरे हुंवती जणा दिनां भीखमराम तो पानखे भी नई बांचतो, दिन भर बैठ उणनै सतसंग री चर्चा करतो। भीमतो जद पैली किसना री थाळी पढे मीरां री, इणमें बिनस किसना खातर त्यार। जे कदेई किसना नै ताव-तप आय जांवतो तो माई रात दिन जीवतो करतो। माई ई क्यूं मोभाई किणी तारै रैंवती। किसना री मां तो हाजर बाळी री मरगी इण कारण मोभाई मां री जागा ही। हरीचन्द समायां पछे हाथ लई मीना भी आपरै माथै ऊपर बोर नइ गूथायो, मन कोई रंगीला कपड़ा पैरया, किसना बिसो'ज मीना दीसती। किसना री थाळी मीना आपरै हाथ सूं धोवती, बिछावणा आप खुद बिछावती अर रात नै किसना रे बराबर मांचो ढाळ'र सोवती। जे किसना थोड़सी'क भी सुस्त दीसती, तो मीना बिना कैयै उण रा हाथ-पग-माथा दाबण लाग जांवती। मीना तो भीखमराम सामनै केई बार कैया सौगन खाय'र, परमात्मा जे म्हारी ऊमर लेय'र भी हरीचन्द जी नै राख देवता तो किमो क। किसना रे दुख में तैयस गई ज्यूं मीना गळगी, डील सूक'र लाकड़ी जिसो हुग्यो।

बाप रै घर में किसना नै आवणो तो भी हो पण सासरै मांयै आबै जगै चोखी लागै, नई तो मूं हो दीसै, इण कारण सासरै गयां बिना भी सरै नई अर ले बठै आवै तो जीव नै अनेक तरै रा संकट पैदा हुय जावै। अब मोवन री चिट्ठी नई आयी तो किसना सोच्यो कै आपरै बनो-बनी दानूं मस्त में रैवै म्हारो कुण फिकर राखै। डाक्टरी री पढाई करै है डाक्टर साब हुय जासी अर बनी की मेम साबै बरण लाग जासी। किसना सोच्यो इसी ठा हुंवती तो हूं चिट्ठी लिखती ई नई। पण किसना नै आ मालम नइ ही कै उणरी चिट्ठी गयां पछै मोवन रै घर मैं किसो महाभारत मचग्यो। फेर बनी कै एक आवरी चिट्ठी और लिख दूं कै जे थे थांरै हाल मस्त हो अर पराया खातर करण में असमर्थ हो तो भी मिनखाचारै रै नातै कांई न कांई जवाब तो देवणो हो एक तीन पइसां रो कारट तो घलणो हो, आ इणै सूं ई गयी ? अर किसना मन ई मन मोवन मायै रीसां बळती ही, दुर्पारै आळो डाकियो आयग्यो चिट्ठी की किसना पैयी।

किसना देवी

थांरी चिट्ठी आयी जवाब पाछो उणी दिन देणो चाईजतो हो, पण म्हारी तबियत खराब होवै रै कारण हूं आज सूं पैली चिट्ठी नई लिख सक्यो।

थांरै दुख सूं हूं घण'र दुखी हूं अर म्हारी चेस्टा है कै थांरो दुख दूर करूं पण पैली हूं थांनै आवरी डाक सूं मोम्यनाथ लिखागी री "बापड़ी विधवा" किताब भेजूं हूं इण पुस्तक नै बांच'र आप मनै लिखज्यो कै आपरा विचार लेखक रै विचारां सूं मेळ खावै'क नई।

आप रो जवाब आयां सू फेर हूं कांई कारवाई करसू । मनै थांरो पूरो ध्यान है, आप बेफिकर रैया ।

हूं मोवन ।"

## १०

मोवन आ चिट्ठी बिसना नै भेज तो दी पण जद चिट्ठी लिखी-जती ही उण वगत तीजां कमरे में पोंचगी मोवन नै सौगन दिरायगी के चिट्ठी भेजसी तो आँख्यां री सौगन ! मोवन सावळ समझायी–देख तू घर में थारे जचे ज्यूं करे जचे जठै जचे जयां जावे, जचे जसो खावे, म्हैं कदेई थनै होट रो फटकारो ई दियो ? जे दूसरो धणी हुवे तो बैंतां सू सीधी कर मालै, इसो लुगाई जिना ई सार लेवे अर आ पोस्पे ओढाय र घर सू काढ देवे, पण मह, हूं देसू मिनख लुगाई रो हक बराबर है, दोनां नै पूरी आजादी है । जद हूं थारे काम में पाना नहीं पालू तो तू रोड़ो क्यू अटकावे ?

तीजां–हाँ, थांरां तो धणी कम्मो चवड़ी बधाबधी आवे । आदमी रुपियो-पइसो हुवे जिको लगावे लुगाई नै सौंपे । लुगाई घर री लिछमी हुवे पे आज तक में मनै कित्ता'क रुपिया मालाया ?

धूप-दीप, वरसण-आरती कर'र किसना फेर पलंग नै बैठगी । मीना आज दिन रा बारै गयोड़ी ही, आमी तो सो घड़ा भी हुग्यो, किसना तो रो रो'र आंख्यां सुजाल्यो । मीना देख्यो आज केई सूं बोल चाल हुयगी'क कांई हुयो । मीना पूछ्यो—बाईसा, क्यूं जीव तो सोरो है ?

किसना—( हड़बड़ाई-हड़बड़ाई मुळक'र ) हां, एकदम सोरो, क्यूं पीरै री सैल कर आया ? ( किताब साम्हा हटै लुकाय ली ) ।

पण मीना आज कमल सो मुलको मुरझ्योड़ो देख'र बाझी नई रै सकी । धीरै धीरै कैयो—बाईसा मनै इसी ठा हुंवती कै बै बारै सूं बोल रो नास करसो तो हूं पीरै जांवती ई कोनी, बाप मे देखो ना सरी, मूं डो फ्वर'र बराखो'क हुयो है, आंख्यां लाल सुज हुयी है । किसना फेर हंसण री कोसोस करी पण आंख्यां बेर साम्ही टळक टळक टोपा नांख दिया कैयो-'रोज तो मनै इयां ई आवै है ।' मीना गैही सिरक'र आपरी धोती रै पल्लै सूं आंख्यां पूं'छी माथै ऊपर हाथ फट्यो, छाती रै लगायी । हीमत रासण री सीख देवण लागो, पण मीना री आपरी आंख्यां भरीजगी, गळ्यो गद्गद् हुयग्यो ।

इतीवार समायां पछै जद कदेई किसना पीरै में रैंवती तो मीना रात नै आपरो मांचो किसमा रै बराबर डाल्ती । आज भी सावण री टैम हुयी जद किसमा नै हाथ झाल'र ऊभी करी । रात किती हल्गी बाईसा सोयो क्नी ? किताब बांचणी है तो क्ळ बांच लिया । इयां कैय'र किताब हाथ मांय सूं खोस'र सैंपी में मेलण लागी तो नांव बाच्यो—बालकी विधवा—आमै ठा पड़ी कै आंख्यां क्यूं सूजी ही ।

किसना रो माथो भाज पत्थर बई मारी हा सोमगी, मीना रावण लागगी। किसना पडीयडी धार कैवे—मोजाईजी थ माय जावा म्हारो माथो को दुखेनी, आधी रात बछगी।

आधी रात नै एकाएक श्रीवल्लभ री नींद टूटी, अरे आज किसना जीमी क्यूं ? उठ्या, उठ'र किसना रै कमरै पासी गया, मीना नै हाथरी मरती देख र कालजै में ठडी सीक पड़ी। पूछताछ सूं ठा पड़ी कै आज किसना जीमी नं 'आपड़ी विधवा' री बात भी मोमा कान में धाल दी। मीना कैयो—अबार जगायो मत, फेर ज दुख बिड जासा तो बच्च दुखणो ओखो हुय जासी। श्रीवल्लभ आंबको किताब लयम्बो सारी रात किताब बांचतो रैयो किसना घटी प्रिया सूं पैली साथ र उण रै कमरै में बरसो।

श्रीवल्लभ इयां तो कट्टर विचारां रा आदमी हो पण सफा अजड नई हो समझायां सूं समझता भी हो। जे किसना रै सुख हुय सकतो हुवै तो वा हरेक मोल ऊपर खरीदण नै त्यार हो, किसना मातर आपरो जान तक देवण नै त्यार हा। जद रात नै किताब बांची तो काळजा धर-धर कांपण लागग्यो, विधवावां री दुरदसा देख'र। विधवा—देवर-देराणी जेट-जठाणी सासू सुसरै सगळां रै पगां री जूती कुंड में कुढबकरो अर मुड़पगो गिणीजै। ज कोई सुभ काम हुवता हुवै अर विधवा आय जावै तो वायण नै ओझाइ'र काढ दवै सुगन मठाम खोटा गिणीजै। माता इरी सूं बारा छूटै गई, अबाप छोरी नै विगाड़तियां री कमी नई हुवै देवर जेठ, सुसरा सगळा राम रा पूरा। वणां रै परवार सूं न दा-त्रियां

हुय जावै तो का तो अधूरो नाखणो पड़ै का आतम हत्या करणी पड़ै। जे कोई विधवा पूरो पाठो जणै तो समाज में फूलो फूट जावै सगळै टुरें टुरें हुय जावै, दाँतां में पीसीज जावै, लोग आँगळ्यां सूं बतावण लाग जावै। फेर ब्या टाबर रो जीवण भार सरूप हुय जावै, उमर भर कलंक रो टीको सगळी दुनियां रा मैणा-मोसा सुणना पड़ै। ब्या सूं सगाई करती बगत भी लोग पैली नांव पूछै। जे इण घरे री विधवा रा टाबर कँवारा रैवै तो भी विधवा बावर कम आफद री बात नईं।

ब्या किताब ने पढती बगत किसना हरदम भीवस्लम रै ध्यान में रैवी। वी सोच्यो दां आ बात तो ठीक है के हाल तई किसना सौम्यो सोनो है ब्यारी सैण भी बिलकुल साफ है पण फेर भी किसना एक विधवा है, एक बाळ-विधवा। जिकी बातां दूसरी बाळ-विधवावां सातर लागू हुवै, किसना भी सायद बणां सूं बच नईं सकै अर एक दिन ब्या नै फेर कोई बडो मारी दुख बठाणो पड़ै।

किताब बांच'र भीवस्लम रो जीव विलमिलावण लागग्यो। माळजी में क्रान्ति री ओर बठण लागगी। आज मन में अवणी के विधवावां रो दुख दूर करणो है, चावे किता ई संकट बठावणा पड़ै आसी जिका मंजूर। पण इणो दब निसचै हुंतो बर्थां भी हाल इणो कांई बपार ध्यान में नईं आयो जिण सूं बणने काम में सफळता मिल सकै। मामै में पणो ई जोर दियो पुग्णाळा आगळी सूं ठरकाया पण भवळ काम को दियो नी। आज भीवस्लम नैं समाज सुधारकां री बात याद आसी। अरे ब्या दिन विचारा म्हारै घरे आया, विधवा रा

संकट मिटाणै रा सवाल लेय'र पण म्हारी मुठी क्यू बणाव किसी'क ही, उणां री बात दाय आवणी तो आगा रैयी म्हैं उणां नै बरूली सूं पाधरा करणै री ठाणी अर जे बापू जी आडा नईं फिरता तो हूं खून खराबी कर नांखतो। म्हारी अक्कल ऊपर अग्यान रो पड़दो छायोड़ो हो पण परमात्मा नै धनवाद कै अबै बो अग्यान नास हुयो। म्हैं उणां नै जान सूं मारण रो संकल्प करूयो उण वास्तै मनै पराछीत करणो चाइजै। अबै आ समस्या हुवणी कै कांई पराछीत हुवणो। आखर आ समझ में आयी कै उण नव-जवानां कनै सूं माफी मांगलूं तो मन रो मैल साफ हुय जासी।

पण इण तरै रा विचार समाज रै आगै राखण रो एक बडो भारी मतलब निकळीजै, इण कारण समाज रै सामनै गयां सूं पैली देवो दयाल जी रा विचार मालम करणा भी जरूरी हा। भीमसेन इणो कदेई नईं भटक्यो जितो आज। पग पग में मामलो गंभीर बणै अर आगलो कदम कठीनै धरे, समझ में नईं आवै। आखर देवीदयाल जी कनै गयो जाय र कैयो—

'आपनै याद है कै समाज सुधारक एक बार आपां रै घरे आया ?

'हाँ वे ई छोरा अबी क्यूं सुणायम्या। बांरो दोस कोनी, टैम आछी हुवै जणै तन रो कपड़ा ई बैरी हुय जावै।

आ तो ठीक है, पण आपनै उणां रा नांव याद है ?"

"हाँ एक तो भगवान जी रो बेटो किसन गोपाल, एक मयारू जी रो बडो चनरू हो अर एक हो जसा मीर हा बांरा नांव

साकह ध्यान में कोनी हा तो आयां री जाव रा ई।

श्री०ब —इयां रै घर रो पत्तो तो आपनै मालम नहं हुसी ?

वे०द०—म्हरे मइ अबै बात गयी गजार्‌, क्यू फायद् पूछोहा मुझरा कायें है ?

श्री०ब —नई बापू जी अबै हू इणां री बात ऊपर दूसरी तरै सूं विचार करणो चाऊं हूँ पणं मैं चौबीसती किचरीजती, रगडोअिजती विधवा नै ई ऊपी उठावणी चाऊं हूं मनै मरोसो है समाज-सुधारक इण बात में म्हारो पक्कायत सायता करसी ।

वे द —तो फेर हूं समाज सुधार सभा मैं जा परे बठै तनै समाज कामरू बादमी मिल जासी ।

श्रीवल्लभ सभा मैं गयो सदस्यां वर्मरो स्वागत कर्‌यो अर उणने भी सदस्यता रो मू हो दियो । सभा रा उद्देश्य अर नियम श्रीवल्लभ नै बिलकुल ठीक लागा इण कारण सभा रो आजीवन सदस्य हुग्या। पण फेर भी विधवा रो विषय एकाएक छेड़नो श्रीवल्लभ ठीक नई समझ्यो । विन लाग्यों के सदस्यों में इत्ता घुलमिलग्यो के आपस में एक दूसरे रै घरे आवणो जावणो हुव ई बोवरवो। सदस्यता सू परवार किसनगोपाल अर पतह श्री- वल्लभ रा भिगरी भायेला हुग्या ।

किसन गोपाल कँवारो हो, इसकी पास वोपार लैन में हुसियार बीस बरसां रो मोटियार समाज री बुरीत्यां सू आप्योड़ो, समाज सेवा म लागोड़ो। सतमास श्री किसन गोपाल रै ब्याव रै सौदे में लागाड़ा

हा पाँच हजार तो रोकड़ो बेटे आगर फटफटियो रेडियो सोनै री साकळ री घड़ी, सीवणै री मसीन, अर गळै मैं पाँच भरी सोनै री तोळ। बऊ आवे जिकै रे गैणो इत्तो हुवणो कै जे सासरे री एक सखी भी नई हुवै तो भी पगां सूं चोटी तई सोनै सूं पीळी हुवणी चाइजै। बऊ फूटरी हुवै तो घणो इ आछो, नईं तो फूटरां अर कोजां रा कोई गाँव न्यारा थोड़ा ई बसै है।

किसन रे मनमें ब्याव रो एक न्यारो ई खाको हो—छोरी पढ़ियोड़ी अर फूटरी हुवणी जरूरी, चावै किसै इ जात री हुवो । पण ब्याव सूं पैली छोरी नै देखणो जरूरी। कंवारी या विधवा सूं फरक नईं पड़ै। विधवा टाबरां री माँ नइ हुवणी। देणदैण री कोई बात नईं एक एक फूलमाळ सूं ब्याव हो सकै, पण वैदिक मन्त्रां सूं हुवोड़ो सुहावे।

किसन गोपाल रे इण विचारां रो मोहनराम ऊपर बड़ो भारी असर पड़्यो जणा नै समझण लागगी कै एक दिन किसना रो दूसर ब्याव हुसी अर हुसी किसन गोपाल चावै जिसो'क मेळ खायो है। इण ब्याव सूं दोनूं घणा ई सुखी रैसी इसी मनाव मोहनराम रै हिरदै सूं मांगती ही। पण अबै आ समस्या हुयी कै किसना री इस्स किय्यां जाणीजै।

किसना आज फेर मोहन री चिट्ठी बांची, मन मैं विचार कर्यो, मोहन जी री तबियत ठीक हुवी'क नईं, अगाऊ तार देवणो ई चावी। सिल'र भाखर ने देय दियो देख कर जवाब आयो। पण जद दसवें अर छक तार रो जवाब नईं आयो तो किसना रो जीव घबरायो, अम्बाई

आवण रो विचार कर लियो। साथै नोकर भी चाईजसी पण फेर मन नै ख्याल आयो कै हूं मोवनजी सारू कोई चीज लेजासूं ? कोई चीज सायत जची नईं, फेर ठाकर याद आयो। ठाकर सूं आप कोई दाना-भूख कैंटै-डांग, बगलबग्गी-घोडी आदि आदमी रो अरथ ना समझेओ किसना रै घरै में एक कुत्तो हो जण रो ई नांव ठाकर हो। ठाकर जाण्योड़ा-पछाण्योड़ो हो। जे कोई अणजाणो नोकर हुवै अर सिवाय विश्वास रा कण्या भाखी हुवै तो रात नै जण रै साथै रैवणो भी जचै नईं जे नोकर दूसरे कमरे में बैठे तो रैवी पक्की री पक्की। ठाकर नै किसना आपरै साथै राख लसी। ठाकर चोटोसो'क मगमेलो कुत्तो भलै हो नी, चोरां रो तो ठाकर नै देखतां सूं ई कालजो कांपतो। एक बार एक चोर घर में बड़ग्यो जद नै ठाकर सेठों रै हवाले कर दियो—पीडी रो मजूर केस लियो चोर बठैई पकड़्यो, जे सिरकै तो दूजो मजूर फेर!

किसना ठाकर नै लेय'र मन्नाई गयी परी। आवण रो तार भी दियो पण कोई सामा नइ आयो। तार ठाकुर दीनां पछ दियो हुसी मोवन नै ठा ई नईं पाखी हुसी मझ जे कोई सामो नईं आवसी तो किसना भठोनै पठीनै टाबरां वा-सुभाव'र आपेई पाली चाली परी, इतो ई नईं समझै कै अ विक्टोरिया'क टैक्सी आली नै ठिकाणा बतासी तो बो आपई पुगाय देसी! किसना पूगगी। हरीचन्द मरयां पछै आज किसना मोवन सूं पैलकी बार मिलसी, पैलो देखी घर ही सुमसाण, अबै विधवा सूनै सिणगार, सारे कपड़ां सूनी मांग, सूनै माथ, सूनै कानां। मोवन हाल मोंदो हो मांचे में पड़्यो हो, पसवाड़ो'क

बिछावणो, ऊपर मैलो चदरो चदरै सूं मैलो मूंडो बिगड़्योड़ा खुला केस चमोड़ी दाढ़ी चिम्योड़ा गाल सूक्योड़ा होठ। आंख्यां मर प्यार डूबी वो थानी पासो सूं माथा देखणबा—किसना रो! मोयन री!

तीजां ने पूरी सोक मानो वो भरोसो हो कै किसना ने घर लावै नई भ्रमत्या घर रा ठिकाणो मालूम हुवते थकां भी सक सक में. तीजां पुलस री सायता सूं घर खोज सकी। माच मासो रै गयोड़ी ही। पण सोच्यो, जे कपास पर ब्याव भी जावे इण मारणा पाछी वेगी मासी।

तीजां ने मूली पासली वो रैयू मामी सावल नइ देसो तो मैला कपड़ा पैर लेसी कपड़ा नई देसो वा चोपड़ा-पुराणा मर फाटोड़ा पैर लेसी, पण फर भी भो विसवास पक्को है कै मोयन म्हारो है, हूं मोयन री हूं। मोयन रै ऊपर रती भर भी कईं रो पखिपात तीजां ने बरदास नइ हुय सकै। कालेज री छोरयां सूं तीजां रै कोई बैर नइ पण उणने खतरो है कै मोयन वयां रै रग रूप सूं-लुभाय'र वांरो नहं हुय जावै। माज किसना आपणी तीजां री आगी ऊपर रुप रग री आप चोईसूं घटा साथै रैवणा रै विचार सूं!

काल रात रा मोयन रो पेट घणा दूख्यो मर डाक्टर रो पाणी ठिकड़यां दीधी। पट वो दूखतो रैयगा पण गला सूक्या लागगा जद पाणी पीवै तो हट जावै, फर गला सूकै, पाणी पीवणो पड़ै पण पीवते ई उलटी। इण ऊपर पाणी रा आंटा पड़गा हो। जिरो पाणी देवो जिरो पाणी पीयोड़्या मर उलटी करयोड़्यो, फर बद पाणी

करने नई रैयो वो मोवन तिसो ई पड़यो हो कारण ठठ'र आपेई पाणी पीवण जित्ती सरधा ही नई। इण कारण अर किसना आधी ता "किसना देवी" सू बेसी बोलोग्यो नई। पण मोवन नै तिस जाम्बोड़ी ही इण कारण मू डै रै चूक मौड'र पाणी री सेन करी। किसना पाणी लाबी पण एक गुटको पाणी भी पेट में ठैरै नइ, पीवो अर उलटी। आ हालत देख'र किसना हरी के माकरी मुखाकृत हुवणी लिक्योड़ी ही। मोवन नै मौत नैड़ी दीसण लागगी अर किसना हातर कांई नई कर सक्यो इण रो पूरो बोलो रैयो।

किसना घबरायी जे एकायक कांई हुयग्यो तो हूँ अठे काई करसू? मोवन नै पूछ्यो—हूँ डाक्टर ने लाऊं? मोवन हुंकारो भर दियो। मन बोडण री गवाई तो भइ ही पण बिना डाक्टर के अजोग हुय जावै तो उमर भर रो धोखो रैय जावै। अस्पताल गयो डाक्टर नै लायी। हालत देखते ई डाक्टर नाड़ में सल्ल धाम्या सोचग्यो परसै पार लगण माथै दीसै पण अब नाड़ देखी तिस संभाल्या ता कोई खतरै री बात को लागीनी। तिस बचैनी अर उलटी रो बखाण ता किसना कर ई दियो हो। डाक्टर साब ठंडो बरफ मौगी, किसना प्यारो पाणी औंधियां चाइक लागगी। मोवन हाव सु मांचै रै नीचै इसारो करयो बरतस में लापगी। बोड़सो'क टुकड़ो मूं ड में घर्यो मोवन चूस लियो कांई तो कठ आला हुया, कालजै में भी ठंड पूगी। बरफ गल'र पाणी पाछो बारै नई आयो अब फेर थोड़ो टुकड़ो दियो, आधी घंटा तई डाक्टर आपरै हाव सू देवतो रैया बचैनी बिलकुल मिटगी किसना नै डाक्टर साब देवदूत दुखै अमू दीस्या मावन नै किसना

तो म्हारेई देख लेसां। थांनै घबरावण री जरूरत कोनी।"

तीजां मासी रै घर मैं सूती ही, नींद आयोड़ी। दिन रा इसी गैरी नींद कदेई को आयीनी। मापरै घर में पूगगी। एक काळो आदमी बडी-बडी आंख्यां, लम्बी-लम्बी मूछ्यां, लगाड़ो डील, विकराळ सरूप मोवन रो गळो दू पग लागो, मिरियोड़ो मोवन आयो ई हो, का एक तेजोमयी देवी, साख्यात लगी, काळै आदमी रा केस पकड़'र धरती ऊपर पछाड़ न्यो। तीजां रा रू' खड़ा हुयग्या, ओर सूं डेको कर्‌यो— 'मरग्येती!' आंख खुलगी, पण तीजां नै सिपनो साचो हुवै ज्यूं लखायो, गभराबी हुगी, ओढणो लेय'र झट आपरै घरे पूगी। भगी नै आंखो खांवते राजी खुसी देख हियो जणै की सोरो हुवो।

आ बात तो ठीक है कै तीजां भयी मैं मांदो छोड'र मासी रै घरे कांवती परी, पण आ बात भी इसी री इसी ठीक है कै मोवन सूं बेसी क्यण रै दुनिया मैं कोई नई हो। जद कदेई मोवन री बेमारी रै कारण मन मैं ऊंचा ऊंचा गोट बठता, मोवन रै बाबत ऊंधी लखवती, तो दुनिया सूनी लखावण लाग जांवती, हाँ सोचई। किसना विधवा हुयगी पण बाप रो घर भर्‌यो पूरो हो, कई बात री कमी को ही भी। तीजां रो बाप तो टाबर थकी रो ई मरग्यो, भाई भतीजो कोई हा नई, मां ही जिकी मांदी-पाती रैवती। इण कारण तीजां मैं पीरै री तरफ सूं कोई से भयवा हीमत नई ही जिण रै भरासै बा मोवन सागै लापरवाई बरतती।

तीजां नै देखते ई किसना अळ-कळ हुयगी—कैनै ठा भा माड़'वां कमड़सीं'क पाछी घरे भजसी। तीजां आंवते ई सामी आवी

किसना पासो गयी किसना तो डरी ई, पण मोबन भी डरग्यो। किसना देखयो जे तीजां मारकूट भी कर लेवे तो कमी तो हुय जाऊ। किसना कमी हुयी कर तीजां किसना रै बाथ्यां घाल'र लिपटगी— "ये बाबा रसने मैं कोई फोड़ा तो को पड़ण नी।" लिपटी तो इसो लिपटी के छोडे ई नइ, वसका भरण लागगी आंसुआं री नदी उमड़गी।

## ११

छाडागिर महाराज भूलणी रो मझो दियां पछै छिदका बीदड़ा तीजां कनै आव जांवता। तीजां दुखी ई आ वणां नै ठा पड़गी, इण वास्ते एक दिन तीजां नै केयो "क्यूं बापूजी नै बस में करण खातर कोई जप करूं ? तीजां केयो "महाराज, इयां किसा बस में थोड़ा ई हुवे।'

बस में नई हुवे तो हूं छाडा सरटा छोडदूं। _

"और ई केई नै आगे करयो हो कांई ?"

' किता ई करयां ने। जिका करी लुगायां सूं मासण तक को करता नी वे आज लुगायां रै केयै केये पाणिया करै।

"करसो करै, म्हारै घर मैं तो हुवै कोनी।"

'थारै घरे तो डांगरो हुवे हूं म्हारै घरे कर लेसूं।"

तीजां नै बैम हुवग्यो कै आपरै घरै बराबर करै क नई करै इण कारण आपरी मासी रै घरै म्हाराज कनै सूं जप करावण रो विचार करयो, पण मोवन री बेमारी ध्यान में राख'र कैवो – 'म्हाराज म्हांरा सरीर ठीक हुय जावै तो पछै ठीक रैसी ? पण म्हाराज कैयो 'हूं इसो जप करसूं कै सरीर भी ठीक हुय जासी अर बस मैं भी हुय जासी। आज मासी रै घरै जोवतै ई म्हाराज जप री पूरणाहुती कर'र एक जन्तर दियो जिको घरै आय'र तीजां मोवन रै सिराणै धर दियो।

तीजां नै जद मोवन री कमटी अर डाक्टर आवण रा समाचार मालम हुया तो सिपनो साचो हुयोड़ो लखायो। तीजां सोच्यो म्हाराज जप करयो जिण सूं पगी बचग्यो। म्हाराज नै मौंको जिण सूं बेसी मैनतानो दियो। जप करयो जिसै तीजां एक बगत भूखी रैती अर एक बगत आधी घोड़सो'क दूध लेवती।

मोवन तो बेमार हो ई अर बरत करयाँ पछै तीजां ई इसी हुयगी कै बस पोगी माटी उबटीजै भई। किसना तन–मन सूं दोनां री चाकरी करती। मोवन घणोई नंको करतो, पण किसना रै सिवाय और कोई हो भी तो कोनी।पूछां तो घणी बक नै ओर सूं बोलतै सुण'र बर मैं आया करती अर का कदेई जब जोवतो तो आय जोवती। किसना–तीजां दोनूं बैम्यां हुवै ज्यूं रमसम'र रैवतां। मोवन अजकाल तीजां सूं भला–भला'र बोलण लागग्यो। मदफ्याड़ बात रो भी राजी राजी हुंकारो भर दैवतो जद तीजा कवती, जन्तर तो चौख आछो बणायो म्हाराज।

किसना भावां मूं मोवन रो घर सरग हुवै ज्यूं हुयग्यो, टैमसर

सगळा काम हुवै। ठीक सर सगळी चीजां लावै। मोवन स्टेशन जावै-आवै। स्टेशन रा सागी घरै आवै तो चाय पाणी और रो सागीड़ो इन्तजाम हुवै इसो इन्तजाम के मोवन रै दूसरै भायलां रै घरां सूं इक्कीस अर इण बात सूं मोवन नै घणी खुसी ही। आज किसना नै भाभी नै एक महीनो हुयग्यो अर किसना चौटा बिस्तर बांध'र त्यार हुयगी। मोवन तो उदास हुयो ई पण धीरां भी चौत उदास ही। ठाकर तो किसना मोवन साथै इण सूं मन्नाई में ई छोडणो हो किसना कैयो—हूं एकली जासूं परी। मोवन री हिम्मत नई हुयी के सागै पुगावण नै जावै। धीरां मन में राजी हुयी, म्हारै बस में हुयग्यो। फेर बोली—एकला कठै जासी थे पुगाय आवो। मोवन ऊपरलै मन सूं कैयो—स्टेशन सूं छुट्टी मिलसी'क नईं, पण मन में राजी कै साथण एकली जासी तो धोखो पड़सी। खैर, छुट्टी रो इन्तजाम मोवन कर लियो, अर ठाकर नै धपधपाय'र सामान बंधाय र, आंख्यां में पाणी भर'र, किसना मोवन साथै वईर हुयगी। धीरां री आंख्यां आली ही।

## १२

सिकन क्लास रा और तो सगळा डब्बा रिजर्व हा, एक कूपे, दो बर्थ रो कम्पार्टमेन्ट, खाली हो पण खाली दोनां-रो बण में आवण करणो ठीक नईं समझ'र सिकन रा डिब्बा पाखा देख'र इन्टर रा सफण

लागा जिसै गाड़ी री टैम हुयगी अर गाड़ी रुकगी। पाछा घरै आया। तीजां नै जद मई सावण रो कारण मालम हुयो तो बोली—हूवे में सावण में कांई हरख हो, पण मन में टाबा री निष्पाप भावना ऊपर जीत राजी हुयी। पैली जिको ऊंचो सूंधी बारणां किसना बाबत सोचती ही वे सगळी तीजां नै फालतू लागण लागगी अर आपरी गळती चवड़ै दीसण लागगी। गाड़ी टुरणं पछै मोवन दूजै दिन सावर री नीचली सीट्यां रिजाव करायली, अर दूजै दिन गाड़ी सूं टुरग्या।

मम्बाई में रैता जिसै किसना तो आपरै दुख री बात छेड़ी नह, सोच्यो, मोवनजी देससी म्हारै तो गड़बड़ है, अर आ आपरो दुखड़ो रोवणनै आयी है। किसना रेल में बात चलावण रो विचार कर्यो। चिट्ठी तो लिख'र भेजदी, पण मूं सामूं ब कैवण में सरम लागी। मोवन नै किसना री बात याद तो हरदम रैयो, पण इसो कोई मोको नइ जुड्यो कै बात छिड़ सकै। मोवन पूछ्यो "किताब बांची?

"हां।"

"चोखी लागी?"

"हां ठीक ही।"

म्हारै ख्याल सूं तो समाज रा मोटा-खोटा बंधण तोड़ फैंकणा चाइजै। आदमी जदै जिको बार जदै जिकी उमर में ब्याव कर सकै है, तो लुगायां पछै कांई बिगाड़्यो है, आदमी अर लुगाई में इसो दुभांत क्यूं?

किसना मोवन री बात रै एक एक आखर सूं सैमत ही पण पकायक परगट किया करै, धीरै सी'क बोली "परम्परा सूं चाली जिकी

चीज कोई झटपट थोड़ी ई मिटै।"

"मिटै क्यूं कोनी, युवकां'र युवत्यां में क्रान्ती री भावना चाइजै, फेर इसो किसो काम है जिको को हुवेनी, अै तो जुग रा निरमाता है भावण आळी पीढ्यां रा भाग-विधाता है। गाडी नै पीलां ऊपर कांधां सूं फेर मायेई चालणोकरसी।"

'युवती तो इसो प्रस्ताव राख भी को सकैनी। जे कोई राखै तो समाज पथभ्रष्ट समझै कै आ गयीबीती चीजें है। अर बवड़े बारे इसी बात केवण नै त्यार हुयी है तो आनै छिपके किनाई कमाई करती हुसी।"

'नई, नई, आनै छिपके कोई किसी नै बवड़े बारे आवण री जरूरत ई कोनी। अर विधवा रै कोई टाबर-टीकर हुय जावे जणै ई पड़दो बायर हुवै।

'पण मन नै मार'र भी लुगायां रैवै तो है।

"कोई चीज री नास्तो थाड़ी ई है, पण इसी लुगायां गिणती री जावे। बाज विधवावां रै माईतां नै पूरो चौकीदारो करणी पड़ै जे थोड़सो क ढीलमढाळ रैय जावै तो छोर्यां कुमारग पड़ जावे।

"सुभागण छोर्यां किसी कुमारग में को पड़ जावे नी, पण बांरै ऊपर धणी री छाया हुवै जिणसूं सब ढकीज जावे विधवा निछ्वरी हुवै जिणसूं एक पांवड़ो ऊक-चूक धरते ई समाज सड़ासड़ साटका सूं सूंतण लाग जावे। अर मनै जचै कै मायड़ रास पड़त ई नाव्यो

रस्ते रो कोई ठेसण आवणी गाड़ी ठैरी। मोहन नैं ठेस भाव रो चौक कई बसी रा। ठमण मांवती अर नीचे उतरता बैट रै

खुजां में हाथ घाल्यां धीरे धीरे प्लेटफॉर्म ऊपर घूमतो । आ बखी
बडी ठेसण तो नईं ही पण फेर भी गाडी मोकळी ताळ थमी । ठेसण
मास्टर रे कमरे आगे खासा भीड़ भेळी हुयोड़ी ही । मोवन चाय
पाय देवण सारू ऊभग्यो । किसना सोच करण लागगी, कठेई
एकाएक इसी नईं हुवै के गाडी टुर जावै अर मोवनजी लारे रैय जावै ।
डब्बै मांय सूं किसना झांकती ही । किसना री बेचैनी देख'र रूप रै
आस पास भी च्यार-पाँच मानस घूमण लागग्या । जद मोवन आंवतो
दीस्यो तो किसना हबो करयो, 'इण डब्बै में !' मोवन नै देख'र घूमारा
आगा पाछा हुय'र रस्तै लागा ।

किसना नै आकळ बाकळ देख'र मोवन पूछ्यो-क्यूं, कद कर
किसो हुयग्या ?

"नईं देख्यो जे कठेई लारे रैय जासा तो पैसा पड़सी थां नै
अर म्हारे नै दोनां नै । असार थां नै देखण आवर बारी सूं मोड़सी'क
नस थारे बारी खिड़के में बारी आगे भीड़ लागगी । भूरा जवान
सगळा री मजाक ऊपर पच्चार पड़्योड़ा पीछे आंख्यां रा मटरका
करण लागग्या । इसा इसा कोई लुच्चो लुच्चो मन ठाय'र गाडी में चावे
भी चढ़ आवै अर मौको देख'र तंग कर बैठे । आज 'ठाकर' भी
साथै नईं, जो हुवै तो फेर मनै कई रो डर नईं रैवै ।

"आगरेजी पढ़'र भी इसा विचार हुवणा हरेक री बात है ।
आजकाल री तो आ फैसन है के लुगाई नै बखे सूं बधा आदमी
देख'र रूप रै रूप री तारीफ करे । रंग चावै किसो ई गोरो हुवो होय
दिखाई जात हुवो नता दिखाई रात हुवो पण हूण सूं एकाएक

बेमरजाद मायाको लामो को ओबेनी इया बारता आज री नारी अठे तई पोडर सूं मूं डो धोळो नई कर लेसी आधे कोई आटे री कमरचकी मांय सूं निकळ'र आयी हुवै होट लाल नई रंग लेसी, अर नखां रे पालस नई कर लेसी, क्य बगत तक मन में चैन नई पड़ै। इत्तो सिणगार कर लेसी अर डोरा-कापरा, मूंडा बडरा सगळा मापरे ई आपरे सामी टक्टकी लगावे जदे आपरो जीव सोरो हुवै के हूं फूटरी दीसूं हूं।"

डब्बे में एक गुजराती जोड़ी भी बैठी ही। मोवन री बात ब्यां री समझ में साबत तो नई आयी, पण फेर भी आधी पड्यी ठा पक्कावक पड़ती ही, अर वै बन लगाय'र सुणता हा। गुजराती लुगाई माथो तो उगाड़'र ई बैठी ही पण फैसन में पग राखण आळी नई ही। माथो तो सगळी ई गुजरातण्यां उगाड़ो राखै। अठे तई केस लाम्बा हुवै अठे तई पल्लो-सो क माथो उगाड़ो राखण री डरों है, ज्यूं ज्यूं केस थोड़ा हुवता सरू हुवै, त्यूं त्यूं धोती रो पल्लो लांबे सूं माथे ऊपर चढणो सरू हुय जावै अर आखर ओढतो माथो पूरो उघाड़ण लाग जावै।

"बाबूजी च्यार आना सेर" करतो आंबां आळो आयग्यो। किसना एक आंबो उटाय'र सूंघ्यो सुगन आछी लागी, पाछो धर दियो। अ जन सीटी बजायी गार्ड झ डो हिलायो गाडी टुरगी।

किसना—हां तो थे आ तो को बतायी नी के गाडी अठे की देर किया ठैरी ?

मोवन—मने तो भूख लागी है, कांई खाणमाळो कर लेवां।

किसना- पछै ? (किसना री आंख्यां डबडबाईजगी)।

मोवन रसगुल्लो अबित सांवते सामो बोयो तो रंग में भंग हीस्यो। बोल्यो मरे भो कोई अचड्या, हूं बात भठैई खतम करूं। नीत कवीं भावीं रा हो थ। अचड्या जीमो तो सरी, हात लेय'र क्यूं बैठग्या ?

दोनूं जीमण लागग्या। थोड़ी वार में जीम'र समान ठौड़ सर राखं दियों। बात बिच में छूटगी। पण गुजराती छोड़ो भी इण बात ने ध्यान सु सुणती ही। थाड़ी ताळ ने बात भाडीं चाल'र गुजराती भाई बाल्या 'क्यूं वेन उण छोरी री बात मने फेर चालू करी ?' किसना बाली हां हां नई क्यूं पेली मनै किसो रोज थोड़ो ई भायो हो।

मावन— राव तो कोई भायो नी भोंख्यां में पाणी भायो हा। अचड्या, सासर आम्यं पुलस में इक्डा देयगी के फलाणो फलाणी छोरी, फलाणे फलाणे पठाण कारे भागगी, सो वयांने पकड़'र म्यां रे हवाले करी जावे। तीन बरसां सूं उण छोरी ने पुलस भाज पठाण समेत गिरफ्तार कर ली। छोरी केवे न्हई तो इण सू ब्याव कर लियो पैली भाळ सासरे सू म्हारे कोई सरोकार नई।'

किसना— छोरी घणी हुसियार होसे ?

मोवन—हुसियार आपई हुय जावे। मगज पड़ पड़ र असवार हुवे। मां रे पेट में कोई चवदे विद्या निधान को हुवे नी। आपां में कोई ठा इण सबरी में और किसा किसा वेसा सीख्या हुवेला।

रात री दस-साढ़ीदस बजगी ही भोंख्यां ऊपर थोड़ी थोड़ी नींद

कदेई गयी हुयू तो बताय दो ।

फूलां—गयी कोनी अर ई वा केवण रो मन करै । जे तू थारे मन री बाता करती हुवै तो मनै कैय'र ई कांई करणो है । दुनिया घणी ई भरी है, पण हूं केनै केनै छीला देवण नै जाऊं ?

सीतां—हूं किसी समझूं कोनी, आपरो हुवै जिको ई आपरै नै सोच देसी दूजे नै कांई पड़ी ।

फूलां मन में राजी हुयी । सीतां नै हाथ झाल'र कनै बैठायी केयो—देख भै मिनख ई मिनख घणा हुवै, ऊपर सूं तो मीठा बोलै है म्हारे तो थारे सूं देखी कोई कोनी पण मांय मैं गाँठ राखै, हुवी हुवी लम्बी हुस्यां राखै । और केई री बात क्यूं करूं, म्हारै पनजी रो मा रात री म्हारे बजाय'र घरे आवता । हूं तो आँख्यां फाड़ अडीकती अर बावळसी आंपते ई गुमसुम हुय'र सोय जावता । अब म्हारी एक आयेकी अटकळ बताती के जे भले मोड़ा आवै अर थारे सूं बई बोलै तो थारे में हनमान की बात छिप । अब पनजी रा मा दूजे दिन मोड़ा आया तो हूं उबासी लेवण लागगी फेर आळस मोड़'या पछै पछाड़ खाय'र ऊभी ई, ही क्यूं ई पड़गो नीचै आसण बिछ्योड़ी ही इण सूं रू रे जाता हुयो मर । पनजी रा मा मनै उठावण लागा अर म्हैं केयो—अरे, तू मनै जाणै कोनी हूं पूनरासर रो हनमान हूं । तू रात नै सदेई मोड़ो घरे एक बजाय'र आवै जणै थारी रिखपाळ वास्ते मनै पुगावण नै आवणो पड़ै, कारण थारे घर कनलो भाखारे मैं साथ भूत रेवै । हूं तो मनै पुगावतो पुगावतो थाकग्यो । आज सूं टैम-सर आय'र घर में सोय जाय नई तो फेर मनै ठा मइ है ।

केय'र तड़ाछ खाय र ढोलिये ऊपर ऊंभी पड़ण लागी, कारण धरती पड़्यां सूं तो हाड चरचीजण रो डर हो। पण तीजां जद ढोलिये ऊपर पड़ण लागी तो ढोलिये रै पागै सूं चोटां रो माथो भचेड़ीजग्यो। "ओय मां" केय र तीजां बेहोस हुय'र लाय हुवै ज्यूं पड़गी। फूलां मन में राजी हुयी अर एक दिन में हड़मानजी बालाजण में पास हुयगी। पण पास क्यूंई मायो हुयगी अठै तो बीन रा हड़मानजी ढूंढता हा। जद केई ताळ तांई तीजां अचेत पड़ी रैयी जणै फूलां धंधोळी—महाराज कोई कसूर हुयग्यो हुवै तो बोल'र कैयो बिना बोले कांई ठा पड़ै।

जणै फूलां री निजर तीजां रै लिलाड़ माथै गयी, लीलड़ी आंख ऊपर लोय छितो लाल-लाल गूमड़ ऊठग्यो। तीजां तो बेहोस हुयी पण फूलां रा भी होस एक दम उडग्या। घणो ई धंधेड़ी पण बोलती कुण बेटो कैनै हो? एक बार तो जची कै तीजड़ा मायां आपरै मरे जाओ, पण फेर देख्यो, अठै आयोड़ी जानी तो रैय कोनी अर जे केई नै मायो री ठा पड़गी, फेर तो लेवा रा देणा पड़ जासी। हुसी न दीसी, आपां तो तीजां नै लेय र अस्पताळ जास्यां। रात व्हाला पड़गी ही। पड़-आप पाड़ोसण नै बुला'र लेज्यसी देखाळण आवर कै हूं तो तीजां रै घर में गयी जणै बेहोस पड़ी ही। पाड़ोसण है, बची अठै कोनी, सामग नै अस्पताळ तो लेजाऊं। तीन च्यार जण्यां उठा'र नीठ मोटा गाडी में घाली। गाडी अस्पताळ आगे ऊभगी। फेर उठा'र नीठ अस्पताळ में लेयग्या। फूलां खेचताण ओर मिल मिळा'र बेन्च ऊपर सुवाण दी।

अस्पताळ री तो बात ई नईं करणी। अठै तो उण आदम्यां री बैगी सुणाई हुवै जिका दो च्यार बार डाक्टर नै घरे बुलाय'र फीस देय देवै अठै कोई सुर बडा अफसर हुवै अर मौको पड़्यां डाक्टरां रा काम अटकता हुवै अठै आपरो काम काढ लै जिका हैट बूट पैर'र स्टिफिनफिट हुयोड़ा हुवै अर क्रीम पौडर सूं लेप कर्योड़ी फैसनदार माथे लाम्बी लुगायां अर का बड़ासारा गैणा पैर्योड़ा सेठ सेठाण्यां री सुणाई हुवै। आडो आदमी तो चपरासी चपरासण अनै धक्का धसेरई अडपट में सकै है डाक्टरां री सला अर अस्पताळ री दवा बीरै नसीब में कठैसी कठै पड़ी है। डाक्टर तो कोई कोई फेर भी भलो निकळ आवै अर हमदर्दी सूं साम-संभाळ करै पण फाटक आळा ज्योतीवान तो मन में सोचै कै म्है तो डाक्टर सूं ई बसी हां। आपरा आपका जाणेका आसी जिकां नै झट दैण मांय बाड़ देसी, दूसरा जे पैसौ रा आवाड़ा है तो बैठा खोटी हुवणो करो चपरासी भी रो कांई लिये। जे कोई भी चपड करै तो धमकी और देखावै—हाथ मा कठै घर कोनी, अस्पताळ है।

पूसां नरस नै कैयो,—मरीज नै देखाण्यो है, डाक्टर साब नै वेगा बुलावो हालत चोख खराब है। दोनूं नरस्यां आपस में खिल-खिलाटा करं'र बातां करती ही। पूसां रै कैणे पर भी नरस्यां री बात री रगत में फरक नईं पड़्यो, बराबर हंसबोलरयां। पूसां घर में तो घणा ई बीमोटा कर सकती ही पण अस्पताळ में पणो पग पड़्योड़ो नइ हो इण कारण नरस्यां सूं बात करती भी संकै भइ मे फटकार नईं दै। पण अब देख्यो कै अै तो सुणाई नइ करै, पर

फूलां नै रीस आयगी—अरे म सुत्ता कोनी बमार री हालत घोत खराब है, डाक्टर साब नै बुलाय र लावो मी! मरस्यां सामने आंस्यां भरण लागगी। एक जणी लाडी डाक्टर कनै गयी जाय र कैयो—एक मरीज आयो है, हालत घोत खराब बतावै।

डाक्टर साब बबाटर सूं आय र सुत्ता ई हा, पाछो बठग्यो आरो जेर लाग्यो। नरस नै कैयो —म्हारै लिवां सगळां री हालत 'घोत खराब' ई हुवै। आ कैय दे, डाक्टर साब भवार सुत्ता है, को आवै नी। नरस आय'र सनेसो सुणायो जद फूलां सूं गम नई खायीजी पार जोर सूं बकण लागगी—सुत्ता है डाक्टर साब पइसा लोवण रा मिलै है'क काम करण रा? कठै है डाक्टर साब मनै कमरो बतावो, हूं आप बाडं बांरै कनै। फूलां री बोली सुणन तो ही'ज डाक्टर साब नै कमरै मैं सुत्तां नै सुणीजगी। पुरण्यां फूलाय र फूलां नै गाळ काढते बठ्या—'बहूत गमी लगाई अस्पताल मैं मावै हो लिवो। गर्भ मैं एक रबड़ री मच्छी चाल दीवां नै देखण नै आया। कूड़ी साची देख देखाय'र बोल्या 'भवार रात नै क्यूं आवी है, ईं री तो कांई कोनी, दिमूंगे संभांवली।

फूलां—नई सा बिचाळुक ऐसो ई कोनी आप साबस तो देखो।

डाक्टर—साबस फर किवां देखूं इसी तूं साबस देखण आली ही तो घरे ई क्यूं देखली नी अठै आवण री भाड़ी कांई ही? कांई आवत है या लोगां री! ठा मळेई काई ना हुवो पण म्हट डाक्टरी मे डॉग पजासी, म्हा इयारा रुपिया पढाई मे मूड खावण नै खरच्या?

करणियां हा । वठां रा विचार सुण'र तो मोहन नै मोकळी खुसी हुवी । किसन गोपाळ सभा रो मंत्री हो । वण मोहन रो चोखो स्वागत कर्‌यो फेर सभ्यता रो फारम भी भरवाय दियो । मोहन ऊपर किसन गोपाळ री काबलियत अर विचारां रो भाखो असर पड़्यो । श्रीवल्लभ मोहन नै लेय'र बठै सूं टुरण लागो । सगळां सूं नमस्ते कर'र रवाना हुयग्या । मोहन नै आपरै दवाखानै रो कह'र श्रीवल्लभ किसना रो ब्याव किसनगोपाळ साथै करण रो चोड़ो'क इसारो कर्‌यो । मोहन नै फेर कोई चाईजतो किसना रो ब्याव सुधारक लावर तो वो खास तौर सूं भलाई सूं अठै आयो ई हो । श्रीवल्लभ भा भी कैयग्यो कै देखो ब्याव की री तरफ सूं इण काम में कोई बाधा नइं पड़ैसी, पण रामचन्द्रजी रो कोई इसा रैसी इण बात री श्रीवल्लभ नै चिन्ता ही ।मोहन भरोसो दिरायो कै वो रामचन्द्रजी नै समझा समझू'र ठीक कर लेसी जिण सूं थारी तरफ सूं इण ब्याव में कोई रोड़ो नइं अटकै । श्रीवल्लभ री हीमत इण सूं चौगणी हुयगी । चौरस्तो आयग्यो मोहन अर श्रीवल्लभ आप आपरै घर कानी फंटग्या ।

रामचन्द्रजी बजार सूं आया अर कमीज उतार खूंटी ऊपर टांग दिया । सुरज धूमा'र टटै इटै बैठग्या मोहन नै इसो कर्‌यो—डीयता अरजनिया आपिया, सगळा भरम्या रोवै है । फेर ठाकर नै इसो कर्‌यो 'गोपजी ! 'हुकम सा' कैय'र ठाकर सामनै आयर ऊभग्यो । सेठ गरम हुयग्या —आदमी कठै गया इसै ऊपर पड़ ई वो आवै भी फेर कोई धपटो इणा आदम्यां सूं रोपतो कठै गया ?

गायां चांपण नै गयो है सा ।"

"माधियो ?"

"बजार गयो है सा।

"केंग भेज्यो बजार ?'

"आ तो मने ठा नई सा।'

"भरजनियो कठै गयो ?

'बजार तो अठै ई ऊभो हो, गयो कठै आ ठा नई।

"तो और कोई है'क नी ? थोड़ा मधरा देवणा है।"

"हीनो ऊभो है सा, आप हुकम करो तो बुलाऊं।

"अरे हीनिया, थोड़ो हुक्यो थोई किता हेला करूंगा, सुणीज्या कोनी ?"

"मने कयो करूंगा सा ?

"दूसरां मैं कह तो तनै आवेई नई आवणो चाइजे कांई ? मै पग दाब।"

हीनो पग दाबण लाग्यो, अबै सेठां री रीस मिटगी। हीनै सू बातां करण लागग्या—

"अरे ब्याव हुयो'क मी हाल बाको ?'

'बारखै साल ई हुयो सा।

"टाबर हुसियार है ?'

हीनो बोल्यो मई।

"अरे छोरी मोटियार है का कोई गुड्डी ल्या लाया ?"

"नई सा है बरस पन्द्र-सोळै में।"

अबै तो पूरी लुगाई है, साथै कांई लायी ?

'सासरै भाळा गरीब आदमी है, पण ब्यार री बगत साक रेस-लेज लागीडो हो।'

अरे बठ पडली आयी'क बटे सूधी!"

दोनो अबे समझ्यो अणे ईंसण लागग्यो।

मोबन कमरै में आयग्यो जणे सेठ जी दोनें सूं बात बन्ध कर दी। पग हाल्या पछै सेठां कागज-पतर-खोगोटां रा कडका कढाया फेर दोनें ने बास्टी भर र महावरा-घर में राखण रो हुक्म दियो। मोबन कनै आय'र बैठग्यो सेठां रा सुर पाछा दीख्या, अर बोल्या—काल मम्बाई रो बिचार है म्हारो।

"काल है!

'हां सा इम्तहान नैडो आयग्यो।"

'त्यारी तो साबत है'क ?'

'हाँ सा त्यारी तो ठीक है, पण बाकी पास हुयाँ सूं तो कोई खास मतलब नई निकळै। बिगरी री इसी पूछ नई जिसी डिवीजन री है।"

'और कोई चीज बस्त सागे लेवणी हुवे तो मंगवा दूं।

'मम्बाई सैर है, चीज्यां तो सगळी मिले है, आपरो एक फोटू हुवे तो बठे कमरै में टांग द्यू।"

सेठजी रै फोटू री बात्यां तो पची ई दी पण मोबन ने देखावटा रो जची नई, थोडो मूं डो भी बतरग्यो, फेर बोल्या —

'ठीक है, हूं भेजाय देसूं फोटू।"

"हाँ एक बात कैवणी ही।

"हाँ, हाँ बोल।"

## १६

दुपारै री दो बजी ही। सीताराम रो छोरो, बरस दस एक रो किसना रै कमरै रै पसवाड़ै मांयै बारै लुकयोड़ो बैठो। किसना नै अचाणचक सुणीजग्यो मांयै बारै आय'र देखै तो राधेस्याम बस्तो लियै बैठो है।

"अरे अठै कांई करै है ?" किसना धीरै सी'क पूछ्यो।

"बैठो हूं।" राधेस्याम निडरपणै सूं जवाब दियो।

इसकूल को गयो नी ?"

" गयो तो हो, पण दुपारै री छुट्टी में पाछो आयग्यो।'

" दुपारो कर लियो ?

" हाँ।"

पाछो जावै कनी ?

"हू सवेरई आऊं दुपारै री छुट्टी में अर अठै मांयै बारै बैठ जाऊं।"

'पाछो क्यूं नी जावैनो ?"

"अठै सवालां रो घंटो है, हू सवालां में कचो हूं, सवाल नई आवै जणै मास्टर जी टांसां सूं मारै।

पण इसकूल सूं भाग'र आयो जणै सवाल किसां सीखसी इयां करेई हुवैई कनी। बठा हूय र कुरसी मावै बैठा भरूमराई

करसी क ठाठो होसी ?'

'ठाठा क्यूं होसूं, भक्खर हुसूं।

'इसकूल मूं भाग'र नई आवणो बेटा हूं नोकरजी नै बुलाऊं वा पुगाय आसी भर मास्टरजी नै कैय देसी जिको थनै मारै कोनी। लै दो आनां रा पइसा।'

नई नई हूं जाऊं कोनी।'

जावै क्यूं कोनी आवणो पड़सी। मूंआ! आ राधेश्याम नै इसकूल पोंचा'र आ। मास्टरजी नै ओळमणो देय दिए कै हाथवाई टाबर है, थोड़ो हियाळी सूं पढ़ावा म्हारो नांव लेय'र कैय दिए।

"अरे म्हैं कैय दियो हूं जाऊं कोनी मनै भेज्या तो म्हारी सौगन है।

सौगन री मनै ठा कोनी, इसकूल तनै आवणो पड़सी।"

'मनै भेज्या तो परमातमा री सौगन है।"

'अच्छ्या मूंआ, आ सेठ जी नै कैय दे जिको वे पुगाय देसी।"

'नइ,नई म्हैं सौगन दिराय दी तो ई मानो कोनी सच्च भगत निकळ योगी होसै है।"

किसना पोथो सो'क कान झाल'र कैयो–'क्यूं बदमासी घणी सीखगी दीसै है चाल थारी मां कनै ले जाऊं। कान झालता ई राधेश्याम जोर–जोर सूं रूखण लागो जाणै कोई चप्पड़ मुक्का लगाय दिया हुवै। बेटै नै रोवाड़ता सुण र गुमकी आपेई आपणै सामनै आयगी तो किसना रै हाथ में राधेश्याम रा कान।

गुमकी – भो रे भा कान छोड। टोरो घणो मड़ो करयो है।

पड़ो। फेर डोग्गा मड़जी रावण आगया। आप पधार्या जद म्हारा सवम हुयग्या, नई तो कैने ठा हास किसी तरह बतळाकरता।

राम०—अच्छा था ठाकरां ठीक है, जाओ।

मोहन—आप बड़ा भोलाई जी नै समझाओ नई क्यूं के म्हूं

*इण तरै किलास में गाय थी काढे।*

"म्हूं घर में हुयूं जद तो आखी के भी नकली इण कारण मिली हुवै म्हूं बेठी रै। मनै थारे गधेड़ो बैस'र गायम कर बैठी। राधेश्याम रो कान पकड़ लियो तो कोई गोखरू बिरग्या। आप तो मनेई गधे जिसो मारयो अर दूसरां नै गाय थी काढ रै ता ई कान रै भी हाथ ना लगावो। इसी कोनी हुवे।"

सीतारात्म रै प्यार डाक्टर हा। प्यारां नै किसना आपरे कमरे में सुवाणती रात नै किसो जगाड़ो है किसा भोडूकोडा है उठ-उठ'र कई बार समाळती। पाणी पावती पिसाब करावती, इण तरै नीठ तीन च्यार घंटा री एकल नींद किसना ले सकती ही। दिनूगे सगळां नै न्हवा धोवा'र कपड़ा पैरावती आपरै हाथ सूं दूध-चाय त्यार'र डावरां री मरजी माफक पावती इसकूल रै मास्टर जी घर रो काम दियो जिको करावती फेर डावरां नै जीमा जूठाव र इसकूल भेजणा, आ किसना रो नित-नेम हो। इसकूल सूं आवण में जे आडासा क मोड़ा हुय जांवता तो आंग्या फाड़े आडीकण लाग जांवती। सियाळे में आप रै हाथ रो तवै सूं उतरता-उतरता गरमा-गरम फलका सुवांवती अर उन्हाळे में डावरां नै भूख पड़ी नई लागे इण कारण लगारण रो पूरो ध्यान राखती। धिमना रा डीगा पढ़े फेर पढ़ावण नै बैठती।

किसना नै टाबर तो सगळाई सुवांवता पण बांरै ऊपर अंतस बसी सीजतो। टाबरां में लागोड़ी रैवती जिणसूं दिन कटाई सोरी हुंवती। पण सुगनी इणरो अरथ लगांवती कै आ म्हारी दुसमणाई है जिण सूं इण नै पूछ लाय र म्हारै टाबरां री हाजरी भरणी पड़ै। किसना जद पीरै जांवती तो पढ़ाई री टैम टाबरां नै बठै सुवाय लेंवती इणी गण रो बोध टाबरां में रैवतो। किसना टाबरां रा हीया तो भलाई किता ई भरो पण सुगनी नै ओ बरदास नीं कै किसना राधेश्याम रै कान रै हाथ लगावै। मोवन तो हाल पढ़ै है, हरीचन्द भरम्या अबै सीताराम ई सेठजी री फू बणां सामण मांडो हुवै ज्यूं दीसै जद सुगनी गरम ज्यूं नी हुवै। आज तो सुगनी गाळ्यां ई काढी एक दिन तो अनै पइये झाड़ूरी बरै बरै दो-तीन किसना रै जरकाय दी। किसना सांभ्यो-अरे झाड़ूरी जे इस ठाक रैवती तो ई कांई बा बिगड़तो नी, पण आज जिका तीरोबा बोल सुगनी बोल्या वै तीखे तीर दाई किसना री छाती रै आर पार हुयग्या। इणो बन्यावो कै तीरा रा घाव पछा गैरा हुयग्या अर आन बोकम में पड़गी।

अब करेई किसना अर सुगनी में खड़मड़ हुवती तो किसना नै भरपूर गाळ्यां खाय'र फेर सीताराम बारै सूं भांपतो जणो किसना री सिकायत हुवती 'म्हारो तो इण घर में निभाव नई हुवै। जिकी छोरी नै अणा हाथां सू फेरा सुवाय'र लायी था ई अबे ज्यूं बीबोवयां करे। आ सेठ कांई कैवे, ना सुमरो फटकारे। इसो धांनै कांई इण रे हेटे हाल मांडयो है ?

'बी लायस ई घर में आय'र कोई सुख देख्यो, आगे ई घणो

दुखी है सुखी नै वणो नीं सवारयो । माना राम हाथ कुंवरजो बोल्यो ।

"थौ तो सुख को देख्योनी, अर' हू सुखी घणा ? मुरड़ी मोल्यां काढ'र आगै बढी ।'

"थारा धणी ता हूं जीवता बैठा हूं क ? था कैरे कनै आय'र रात्रै दुखड़ो कैनै सुणावै ? कि रै सामनै आकरा म्हटै ?"

"थीरै दुख ई कई है, खावै-पीवै मौज कर है । नइ अणी म्हारा दादोजी चाल्या अर म्हारा दादीजी तीन बरसां तई ता धको मूं थारे पगई को दियो नी । काली साखर अर साखर उपर काली सारज सू लपेट्योड़ा बैठा रैवता । पक्र बगत जीमता परवी सोवता ।"

"वै बास्या गयी समै रै सावै साथै रिवाज फुरवा रै ।

"जिका ठीक मुजब चालगिया है वै तो चालै ई है नइ अणी मनोई शोग वणै म्यू भूव जावा ।"

"तू दूजो नै म्यू देखै थारो मावरी ढाणी ऊपर हाल घर र देख । हू जे अबार मरजाऊ तो तू तीन बरसां तई साखर ऊपर सारज मैं लपेट्योड़ी मांद मांवै, धंध हावां, घर मैं पड़ी रैय जावै ?

"भूखो मूं मैं मांय मूं । समावा राड बातगा ई का छेल्याओ नी ।

"बात टाल मत म्हारी किसी बात'र रायो है का थारै सुहाग रो अमर पट्टो लिखायोड़ो है ?

एक दिन आगै जद तुळछी कान भर्‌या हा सीताराम किसना ने कोसी हरै पटकारो पण मां दिनां मे किसना आपरै भाई सूं सीताराम री माकरी खातर बात करती ही इण सूं तुळछी री बात रो सीताराम ऊपर असर हुयो नईं।

रामचन्द्रजी तो गुरुकमरा लाटा हा। जद मोयन रै मामनै आभर तुळछी रो कसूर बतायो तो तुळछी नि ऊ पी नीची घाल्या बैठी, अर तुळछी आय'र सिकायत करता तो किसना नै खरी खोटी सुणाय देवता। पण इसी घटना हुयां पछै किसना ने इयां समाोपसो आयो कमरै ऊपर कोई दुख रा पाड़ टूटग्यो। खावणो-पीवणो भूल जांवतो कमरै रा बारणा बन्द मांय सुती रैवती। कनाइ करूंकोई किसना कदेई पीरै गई जांवती कारण अखरा उदास मूं हो देख'र भाई भाभाई अर बाप रै जीव नै पूरो सूरो साच दुख जांवतो। आज मोयन पाछा मम्माई जांवण आया हा इण कारण मोयन जांवता किसना सूं मिल लू। मोयन कमरै कनै आया तो बारा बन्ध। कड़खड़ायां रा जवाब नई हलो कर्‌यो 'कुण हुसी मांय ?' किसना रा बिचार तो हा के आज केई मे ई बारणो नई खालयो पण जद मोयन री आसी सुणी तो झट ऊठ'र, आंसी रा पल्ला सभाम'र, किवाड़ खोल दियो।

मोयन—आज काई, अम्माई रातां सुती रैवा ?

किसना—थे रातां सुती रैया अर पैली कम्बर घाम हुया रहू ता मठै घर मे बैठा हां बिखा बच म्हूं ई मारफूट'र दिन पूरा कर देवां।

मोयन—हूं थारो मतलब समझग्यो।

गैणां री गांठ उपर दोनू पगा धरे ठाकर बैठा है, जीम बारे लटक्योड़ी है, तिस रै कारण सिसक्यो हो और कोई बोट फेर को हो नी। पसवाड़े ई फूलां रो धणी पीड़ा रै मजूर फादूर्या बाद म बिसरण लाग्यो तो ठाकर फेर बटको भरण लागा भार बैरजा अद ठाकर फूलो बटको नाइ मरूया। धीर्जा रा ता होस उडग्या, सावजा तो हा के असमान मे राव फाड़ा पड़ग्या जिकी आस्यां रो बखाण कर र धोड़ सवासी क इनाम मॉगसू पण ठाकर बैर साज दियो।

फूलां रो धणी अमली माया का हामी; फूलां जिसी लावरी ने भी वो केई बार लेखाव देवतो। आयडा सुवते ई सफा सउकार हुवै ज्यू बाल्यो-माज तो विन सुमा हा मद तो सगला गैणां सूं हात धा बैठवा। धणी नै देख'र अद फूलां पू चन्ा काड लिया अर हौलै हौलै बोलण लागगी अणी मोवन समझ्यो के चोर कुण है।

मोवन—थ सूनै घर मे गैणैं गाँठें री पान्ट यांचे किसां बैठा, भै तो चोरां रा लक्खण है!

चोर—अबार हू जिकै ढंग सूं बैठो हूं ज्या सूं ता हू पूरो धार सावत हुयू विना केई री गवा पण मनै आयो जिका तो आळी हरै बोल्छे है नी के भो सकस पराई चीज मे नूह बराबर समझै।

मोवन—कैवा चाईं हो चोर तो म हा है।

चोर—नई सा चोर वा कोई दूसरो ई हा जद वो घर मे आयो ता आप रो कुत्तो जोर जोर सूं भुस्यो। चोर कनै डको हो जिण सूं कुत्त रै ठोको दीस्यो ही। मनै खड़को भड़को सुणीज्यो

मिल लेवै।

मोहन वणांनै समझाया कै म्हारी तरफ सूं कोई गलती नईं हुवी तो हूं जा'र सामो आऊं, डाक्टर साब वेळा वरताव कर्‌यो आ वणां री भूल है इण कारण डाक्टर साब जे मिळ्यो चावै है तो राजी खुसी पधार सकै है। पण किण आदमी सुघरस लेय'र आया, वणां आ वकील राखी कै पैस लुगाया री हुवै इण कारण जे लेडी डाक्टर नै मोहन आपरै घरे नईं बुलाय'र खुद वणां रै घरे जावै परो तो कोई खोट है? वणां री इण बात सूं तो मोहन पूरी तरै सेमत हो कै लुगायां री पैस हुवणी चाइजै, पण इणमें भी एक बात और ही—के लेडी डाक्टर साब लुगाई है तो वीवां'र फूलां भी लुगाया है अर डाक्टर साब सूं फूलां री उमर वेसी है इण कारण उमर रो ध्यान राखता थे डाक्टर साब फूलां सूं मिलण न घरे आय जावै तो कोई खोट नईं हुवणी चाइजै। डाक्टर साब नै फूलां सूं ई मिळणो हो कारण फूलां रो ई डाक्टर साब अपमान कर्‌यो, वीवां तो वेहोस ही।

पी० एम० ओ० कनै सिकायत पूगी जदे डाक्टरजी रो जवाब तलब कर्‌यो, डाक्टरजी आपरी बात मे तो गुळ-लपेटी बात लिख'र टाळण री पणी ई कोसीस करी, पण पी० एम ओ० साफ साफ केय दियो—

१ इणी रात मे अर कोई रोगी आवै, पढ़ायत वेसी तकलीफ रे कारण ई आवै नईं तो आधी रात नै कुण आवै।

२ इसी हालत में अस्पताळ में भरती करणो तो ड्यूटी आळे डाक्टर रो सामर्थ सूं बारली बात है।

२ मरती मई करणो अर रोगी रै साथै इसो रूखो बरताव करणो आ सगळा सूं बत्ती बेशरमाई री बात है।

पी० अेम० ओ० मोहन नै अस्पताळ में बुलायो। मोहन अर पी० अेम० ओ० कनै गयो परो तो उण लेडी डाक्टर नै भी बुलायी फेर कैयो—आप सिकायत करी जिण पर म्हैं आछी तरै ध्यान दियो। आ लेडी डाक्टर री सरासर गळती है कै उण आधी रात नै आपरी पत्नी नै मरती मई करी अर बेसऊर सूं बात करी।

लेडी डाक्टर बिच में बोलण लागी तो पी० अेम० ओ० गम्भीरता सूं बतायो—नई थारै बोलण री अबै कोई गुन्जाइस है नई। फेर मोहन नै पूछ्यो—अबै आ चीज आप रै ऊपर है, आप जे इणां नै माफ कर देवो तो आ सिकायत हूं अठै रोक दूं नईं तो फैसलै खातर आरोगमाज ऊपर भेजूं हूं। फेर डाक्टरनी नै कैयो—थांरी नोकरी कायम रैवणी कठण है।

अबै डाक्टरनी महसूस कर्यो कै उण दिन पीड़ां में रैवण मैं धावमठोम कर'र, कूड़ो साचै बटका-बोटको हुवै ज्यूं बोल'र कित्ती बड़ी भूल करी। 'नोकरी रैवणी कठन' सुणतै ई माथो मण्णाट मारण लागग्यो। रंगीली दुनियां बिदरंग लागण लागगी। कांपतै सुर में मोहन पासी झाक'र कैयो—म्हारी गळती खातर हूं माफी मांगूं।

सिकायत करी जिकै बगत मोहन रै मन में डाक्टरनी सूं बदळो लेवण री जबरदस्त भावना ही। उणनै आ भी आसा नई ही कै पी० अेम० ओ० दूध रो दूध पाणी रो पाणी कर देसी। पण अब डाक्टरनी री नोकरी खतरै में पड़ण रो सवाल सामो आयो अर गम-

गळ्ळे थार्स्यां लिप रूप मोयन सूं माफी मांगी तो ऊंडे विचार में पड़ग्यो। हां हां नौकरी छूटे तो पछी छूटो भा ता मगवान पचाय तो नई तो तीजां जे मर जांवती तो किसा गाडा थोडा ई आवीजता हा। मर केनै ठा मा डाक्टरनी इय तरै किलाई मर्णा साथै इसो कोम्हो परताव कर'र क्या री बात समती दुसो इसी डाक्टरनी देस री कांई सेवा करसी इसी री नाकरी छूट जोकी आछी।

फेर मामले रै दूसरे पहलू मैं छियो। डाक्टरनी तो बयारी, पय है हाल कंवारी छोरी, के नौकरी सूं काढीजगी, तो ऊमर भर री ठेव लाग जासी, दूजी जागा मी सरकारी नोकरी रै मामल नइ रैवे। जे इय री मगाई हुयोड़ी भी है तो भी नोकरी कायम रैयां सूं ई ब्याव हुय सकै है जे नोकरी नई हुवे तो खाली डाक्टरी पास कर्‌याड़ो कांई काम रो। आरै रैयी प्राइवेट प्रेक्टिस री बात तो बै सूरत्यां ई दूसरी हुवै इसो दारा बोल्यां कुण मूत माइवेट डाक्टर कनै इलाज करावय नै आमी ? आखर मोयन आ ई निरधै करी के देस री आयोड़ी बेकारी में एक और जवान बड़की बेकार हुय'र का तो आपरो जीवण बरबाद करै अर का देस रै ऊपर भार सरूप हुय'र रैवे। डाक्टरनी नै मोयन माफी देय दी अर पी० ऐम० ओ० डाक्टरनी नै आगी वास्तै ठीक तरै काम करय री हिदायत करदी। मोयन टुरग्यो।

मोयन कोई वीस-पचीस पांवडा गयो'र का बारै सूं चपरासी आय'र खोयो हाल्यो—पी० ऐम० ओ० साब बुलावै। मोयन आप रै मन में तो सोच्या—किसो क पेसकर है, पय ऊपर सूं कैय'र कांई नई दरसायो। पी० ऐम ओ० कैवो—देखो साब इय केस में

आपरै सागै आछो बरताव नई हुयो जिण सूं आप सदैई डाक्टर अस्पताळ बाबत माड़ो ख्याल ना राखीजो। अस्पताळ जनता री है, जनता री सेवा खातर है अर डाक्टर जनता रा नोकर है अफसर नई। आइन्दा आपरै सागै आछो बरताव हुसी। डाक्टरजी नै मामलै री इण बाबत मिजाजन ऊपर पी० अेम ओ० मोहन रा दसखत करा लिया।

तीजां नै पी० अेम० ओ० आप आछी तरै देखी आपै सूं पागलपण रो भूत उतरग्यो नई। मोहन जद समाचार पूछ्या तो पी० अेम ओ० कैयो के तीजां रै माथै में खराबी आज काल री पैदा हुयोड़ी नई है, कम सूं कम तीन-च्यार साल सूं इण रो माथो खराब है। आप इण रै माथै रो इलाज पैली भी करायो हुवैला। अबै मोहन री समझ मे आयी के तीजां क्यूं सूं क्यूं लड़ाई झगड़ा करती ही। साच्यो मनै इण रा इलाज पैली ई करायणो चाईजतो हो आ म्हारी ई गळती हुयी के नई इणा परम गफलत में काढ दिया। तीजां री देखभाळ री जोग्यां निजरू रोगी अबाडां रो रखरखाव, खास मरीज्योड़ी चामड़ी अर सास मास में रूपको देखर मोहन नै तीजां रै सायब रुपया में इणको भरायो। डाक्टर नैं कैयो—डाक्टर साब दवाई चोखी सूं चोखी देवो जे अस्पताळ में नई है तो बजार सूं लिखाओ हूं पइसा देवण नै त्यार हूं। इणै में फेर गैलाई रा पठोठो आवो, आपरै ई हाथां सूं केस कोस लिया, मूंडो झरूट लियो, नरख हाथ खारण आंगी रा तीजा। इण रै बळ पोडगी।

मोहन इती दर तो ऊभो ऊभो देखतो रैयो पण अबै उठी ऊठो का रहीजी नी। सायद इण बात रो रपास आयो हुसी के हूं

# १७

मोहन री परीक्षा एकदम नैड़ी आयगी, हीरां री मांदगी सूं मोहन री पढाई में कम बाधा नईं पूगी, पण आ हरख री बात है के मोहन आठ लाग्यां पछै सोवण आळो नईं हो। ठेठ सूं ई आपरी पढाई रो मोच राखतो दिनूगै वेगो उठणो रात नै मोड़ो सोवणो ओ इण रो बण्योड़ो नेम हो। इण रै अलावा कुदरत री दैया सो गजब कर देवै। इस्कूल री टैम में भी मोहन आपका सगळा रिकार्ड मांग लिया-मास्टर जी जिकी चीज किलास में बोलता, उण नै मास्टर बो तो खाली ठीक बणी तरै नईं समझ सकता, पण मोहन रै माथै में कोई रिकार्ड करण री मसीन ही। कोई मसाल के एक भी आखर कठ पूछ हुय जावै इण कारण मास्टर उण री तेज बुध्दी पर अनोखी निजरयु मगती ऊपर मोहनसे अचम्भो करता। उणां नै भरोसो हो कै एक दिन मोहन पढायत कोई बडो आदमी बणसी।

केई केई तो हुसियार छोरा इसा भी देख्या है जिका परीक्षा री लागी टैम तई पोथी में मस गुड़ायोड़ो रातै'र पढता पढता परीक्षा भवन रे मांय जावै परा। इणचारज किसान लोसी मर ई चोटे पण मोहन नै आपरी पढाई ऊपर भरोसो हो। घर में पढाई करण में तो

कोई कसर नईं छोडतो पण परीक्षा पास आंवता वगत माथै पंखी घना मन लेआंवतो। परीक्षा भवन आगे उण रा साथी पैली सूं ई कोई न कोई पूछण लागता अबोला रेवता अर मोहन हरेक बात इसी फुरती अर हुसियारी सूं बतांवतो के उणरा गुरजी पुण नईं बता सके।

परीक्षा अर नैड़ी आवगी तो छात्रां रे अस्पताल में आवण ऊपर रोक लागगी जिण सूं वे पढ़ाई रोग्यां री हालत सूं वाकब नईं हुय सके। इण कारण लड़का अस्पताळ रे बारकर घेरा घाले, डाक्टरां रे बंगलां जाय ने मरीजां री बाबत समाचार जाणन री कोसीस करे जिण सूं वणां ने इम्तहान में सायता मिले। आ बात तो ठीक है के रोगां री बेमारी री मोहन ने ठा नईं पड़ती ही पण पढ़ाई रे बारसे तीन बरसां में कालेज में आपरे दाव री चतराई सूं मोहन लगभग डाक्टरां ने चकराय दिया। उण ने अस्पताळ रे बारकर घेरा घालण री कोई जरूरत नईं। किसो ई परचो आवो, किसो ई रोगी आवो मोहन आछो तरे त्यार हुवोड़ो हो। गुरू लोगां री आसा रो मोहन थम्भो हो। वणां ने भरोसो हो के मोहन एम० बी० बी० एस० रा भी सारला रिकार्ड तोड़सी अर इण सूं वणां रे कालेज अर अध्यापकां रो नाम भी कम नईं चमकसी।

शुक्रवार ने तीसरो परचो अर आंवते मंगळवार सूं इम्तहान खतम हुसी। इत्तो हुसियार हुवते थकां, अर पढ़ाई में कोई कसर नईं हुवते पर भी मोहन रे मन में कमजोरी आयगी—पछवाड़ लारला दिनां में म्हारो ध्यान पढ़ाई पाछी जितो रेवणो चाइजे जितो नईं रेयो। अे बदाल

पाडोसन नाई मारै तो फेर मू वा देवाळ्या लोगो को रैऊनी। मोवन रा इण बात री ठा रै प्रिन्सिपल नै ठा पड़ी वा रात नै दस बजी मोटर लेय'र मोवन रे मढै पूग्या समझायो—मोवन काल तो इम्त्यान है अर तू पग पाछा देवै ? थारै ऊपर वा सगळै कालेज रो दारम दार है। म्हैं सुणी है कै थनै पाडोसन रा मऊ है जो सफ सफ फासनू दै, मू जे इम्त्यान देसा तो कोई मरती हुवी नइ जिकी फस्ट पाडोसन सपथ म थनै राक मरै अर इम्त्यान नइ देसी तो सात बरस हुनया रीसै ई है।—मोवन काल इम्त्यान देसी।

आज इम्त्यान रो पैलड़ो दिन हो। परचा दारो आयो सगळा छात्रा परचै नै भटीनै सू भटीनै उल्टो सीधा करै। मन म परचो राम्वळिये नै गाळ्या काढै पण मोवन नै परचा पढो सुगायो दूसरै बड़ख साथ बिचार'र लिखणा मड करयो जिको मोवन पैसकी कापी भाभी मू पसी अर नाखी। और लोगां भी सवालां रा जवाब तो दिया पण जिका अरमान लेय र आया हा वै मिट-मिटायगा। मोवन रा सगळा जबाब सरीसा, एक एकै सू इकीस। पण फेर भी मोवन सकी मारणा पासी मांय सू न. हो। परदा री टैम मू बद सवालां रा जवान पाइसा क पैकी सिलीज बावना ना मगळी कापी ध्यान सू पड़ो जिया सू ऊ मावस री कोई भूल-चूक हुवती वा वा ठीक करीज जावती, ज्यांरी रा इस परचा हा सगळा सिरैनार हुगया।

मन्दिरसल म भी कई रो हाल पूछ कई रा पग पूजै, कई मैगरो-पैतरो हुगयो। एकवार मोवन रो माथा मो चक्कर न्हाखग्या

कारण वणरो मरीज वणी कमरै में हो जिण में कदेई वीणां मरती हुयोड़ी ही। वीणां री हिवड़ै री तसवीर एक पल खातर मोवन रै नैणां सामी तिरतीजगी, पण फेर इण चीज सूं ऊ'णो उठ'र, मोवन आपरो काम सरू कर'यो। मैट्रिक री परीक्षा भी सावळ समाप्त हुयगी।

## १८

वीणां समापत पछै भूआ मोवन रै रसोई करण लागगी, रसोई रो रुजगार तो वणनै मिळतो ई हो, पण आ लाजो रुजगार सूं राजी नई ही। मोवन रो समझे मन आपरो सुखरो मळायो चावती।

पहला वार मोवन रै सामो प्रेम रो भी झटको देखायो पण अब उण रो मन पक्को करतो देख्यो वह आ आस ही टूटगी। एक बात ध्यान में राखण री है कै मोवन फूठरोफर्रो जवान हो इण कारण भूआ वण सूं प्यार करणो चावा हुवै आ बात नई है अंतस में तो उण मैं वणकी पे भा ई भायो लागतो, मोवन रो तो मन चाव'र सुरगो बणावणो चावती ही।

एक दिन भूआ मोवन नै रसोई रो पचार देय दियो। सगळी गळी में भी कैय दियो मई न्हैं मोवन रै रसोई करणी छोड दी। फेर कोई आठ-दस दिन आडा पाड'र मोवन रै घरे गयी। बैठी चूं'ठी

गिंडास रै हाथ फरस लागगी। और भी कोई काम काज हुवै तो फूलां मेकप रै कारण मोहन मैं करस नै त्यार ही। मोहन बारै सूं आयो हो थक्योड़ो हो। फूलां बोली—थे न्हावो धोवो करलो हूं चाय बणाय दूं। मोहन न्हावण लागग्यो। फूलां झट बोरसी सिलगाई सागीड़ी चाय त्यार करी। मोहन कपड़ा पैर'र आयो जितै प्यालो सवाजम।

फूलां रो मूंडो आपई उतरयोड़ो हो। प्यालो पावण री मनोल में हो। मोहन नै याद आयो—अरे टाबर तो आज भूखो रैयो होसी, थोड़ा बिस्कुट चाय ठाकर नै भी सुवाऊं। फूलां ठाकर सागर चाय पाल दी, बिस्कुट सेमायी। अरे ठाकर! तू एक जानवर, पशु, अर मोहन एक मिनख-डाक्टर। पण ठाकर तूं मोहन सूं बसी। चाय रै नैड़ो मूंडो करतै ई हट प्यालो गुड़काय दियो। मोहन सोच्यो भुग्गी हुमी, इण कारण आपरी चाय ठाकर रै प्यालै में ऊंधाय दी। पण ठाकर रै इत्ती पास कठै प्यालो मूंघ'र फेर पंजे सूं गुड़काय दियो। मोहन ठाकर ऊपर नाराज हुयो। सांकळ सूं बांध दियो—भाखड़ा रा बदमास अर, भूख-तिस नईं है तो मठै ऊभारै। फूलां रै चिन रा तोता उड़ग्या। एक प्यालो और मर्‌या भर दियो मोहन आगे। फूलां मन में इष्ट देव रा ध्यान लगाया।

साचा वफादार जद री सांकळ्यां तोड़'र भी मालक रा रक्षा करै। ठाकर देख्यो तो फूलां सानने मंगवा काढ़ो, धोळो कपड़ा पण पाछो मखमोल आय'र जद फूलां परवा मड़ करी पर तो ठाकर रै निरदाळ रूप में जिण सूं आई कमी मई रैदी। कूद'र मार्‌या हिवड़े सांकळ रा दो टुकड़ा। मरग पड़ पो ठाकर फूलां ऊपर। उणरा धाड़ दिया

तो उण सूं ऊपर वैरी मौखाद है के विधवा सुवागण बणै ?

पण किसनगोपाळ रै आ बात साजम जची नईं । उणी जगत जबाब दियो 'एक आदमी री जद लुगाई मर जावै है तद कोई आपो आ बात मान'र धीरज राखो के करमां में रंडवो रैवणो लिख्यो है अबै ब्याव ना करो । या आ भी कोई जरूरी कोनी के जिके दूसर ब्याव करै उण री दूसरी लुगाई भी मर जावै । इसा घणा ई दूजवर है जिका आणंद सूं आपरो जीवण बिता रया है । फेर कोई कारण के एक लुगाई नै ओ अधकार नईं । वा सिड़-सिड़'र ऊमर भर मरती रै, जिण में फेर किसना किसी विधवा किणी नै खाली हत्तै में रो ताप खाम्यो है ।'

किसनगोपाळ री बात रो तो मदनलाल जी कनै कोई तोड़ नईं आम्यो, पण जिदाजिदी में जिके चुप रैय जावै उणरी हार मान लीजै, अर कोई, छोटो-मोटो भी, जे बोलतो रैवै तो हार नईं मानीजै, बैस भलां समझीजै । इण कारण मदनलालजी बोल्या- रैया, के मिनखपणो है जद तो हूं कोई किणी बात सूं थारो विचार बदळ जाती, पर थे अधपग्गम गयो है, तो थारे सूं माथा लगावणो अकारथ है । अर आ सोच पैं जवानी थारै एकली ऊपर ई आयी है । कदेई हूं भी जवान हो इसा जवान जिकै री देखादी में थारै जिसा किता ई आवै । हूं नागपुर गयोड़ो हो । ठेसण ऊपर घूमतो हो जद देख्यो के एक परवार है—दो छोरा १४-१४, १५ १६ बरसां रा एक छोरी १८-२० बरसां री अर एक तीनां री मां । आं लोगां

आपरा टिगट खरीद्'या अर हूं खिड़की कनै ई ऊभो हो। संजोग इसो बण्यो कै थ्यां रो बटवो गिगटां समेत गमग्यो। अबै तो मुसीबत पूरी हुयगी। टसणमास्टर म्हारै सैंणो हो म्हैं गराई रीबी कै थां टिगट म्हारै सामनै खरीद्'या अर टेसणमास्टर आपरी जम्मेवारी सूं बांनै गाडी में बैठाय दिया।

बीं अजान लड़की ऊपर म्हारै रंग-रूप अर बरताव रो इसो परभाव पड़'यो कै तू सुण'र अचरजसी। आपरै घरे पूगते ई बण म्हारी मनै चिट्ठी भेजी कै हूं थासूं प्यार करूं हूं अर थांरै बिना मनै कांई चाओ नईं लागै। पण बटा, हूं थारै भाळै हरं हट स्यार भर दूयग्यो। म्हैं म्हारी माँ नै बा चिट्ठी दिखाली। माँ कैयो "नईं बेटा बै किरोड़पती आदमी आपां साधारण बारो आपांरो मेळ कठै ?" अर म्हैं बण चिट्ठी न लड़की रै बाप कनै पाछी भेज दी अर बा लिखी कै म्हैं तो आपरी लड़की नै बैन बराबर मांनी, फेर आ इण तरै री चिट्ठी म्हारै कनै किण तरै आयी ?

थोड़ा दिन टैर'र फेर बण लड़की री चिट्ठी आयी कै थ जे मनै नईं मिलसा तो म्हारी जान नईं बचैली। पैली तो म्हैं बण चिट्ठी नै दबाय'र राखली पण फेर बण चिट्ठी नै दा एक महनां बाद लड़की री माँ कनै भेज दी कै म्हारै कनै इण तरै री चिट्ठयां आगै सारू नईं आवणी चइजै।

किसन ! तू सुण'र इचरज करसी कै छोरी री माँ मनै पाछा कांई लिख्या—"तू आदमी कोनी हींजड़ो है। म्हारो बटी रा हिरदारो है। बनै डरपाँ पढे बीं करैई पाप'र राटी नईं मावी। थारी तसवीर

थ्यु रै सामी रात दिन रैयी। थारै विरै म बा झुर झुर र मरगी। सू सारो रैये मबै म्हारो बेटी रा चिट्ठी थारै कदेई ना आवैनी।'

जे उण वगत हूँ थ्या सूं ब्याव कर लेवतो तो आज म्हारै लाखू रुपियां री ध्यान गिणती नई रैवती अर हूँ एक निरी बडो इसटेट रा मालक हुंवतो। पण माईतां री अम्बा रै ऊपर कर एक पोवडो ई धरयो पेटै रो फरज नई है, इणी बात नै ध्यान मे राख'र म्हैं लाखू रुपियां नै ठोकर मारदी। छाइकी भी कु वारी ही किसना बड विधवा मई ही।'

कि० गो०—इण बात सूं तो थ थारी आपरी गलती रो सबूत दियो है। आज जे थांरै कनै लाखू रुपिया हुंवता, तो म्हे लोग डाक्टरी अजीनियरी मड कर लेंवता? पण ओंवती छिछमी नैं आप ठोकर मारी! आपां कनै तो केई पीढ्यां भी इत्ता रुपियां मड खुड सके।

मदमाम—तू तो है खर दिमाग, अर खोपडी है थारी थुरी री।

कि गो०—आ तो मनाछी चोज है कुरो, री खापडी में गधै रो दिमाग।

म मा —थाप सूं ई को टळैनी ? कुतरक करै ? बनै ठा है हूं कुण हूँ थारी मां रो धणी हूँ। जिकी मां रा तू पग पूजे है, वा म्हारै चरणा री दासी है।

किशनगोपाल देख्या अबै थापै सूं पारै भारया आगया इण कारण पटै सू उठग्यो। काई काम पार पड़ै तो मिठास सूं पड़ै जिसो मायो सागाथ योडो ई पड़ै। मदमालजी पाणी रो लोटा भर्‌यो

भर गुटकै सायै गाळ्यां काढता रैवा ।

भव किसना रा ब्याव हुवण आम्रो, माव वणनै भतमाळजी रै रुम री ठा पड़ी। मन में विचार करयो—जिव घर में हूं सुखी रैण रै विचार सूं आई हूं, पण घर रा बूढा बडेरा जे म्हारै गर्यां सूं नाराज भर दुखी हुंवता हुवै, इण सूं तो अबार चलै जिको ढंग ई ठीक है। कोई करेई जेठाणी गाळ-गुपत सुणाय देवै तो हूं भी भवै कोई कसर करूं नी। सदेह वडै जिके नै कुण गिणै ? पण दूसरी जागा गर्यां सूं परम हितेसी मोवन जी सूं तो अन्तराय पड़ जासी। वर्यां रै सिरसा मिनख घरती माथै कठै वडिया है ? मिनख नई, मिनखां में देवता है। भवकै सम्बाई सूं आवा वद मोवन किसना सूं मिल्यो, सासा वेर तई बार्त्यां करी ठाकर नै पाछो मोसाण दियो भर ठाकर किण तरै कठ रै गैयो भर मार्यां री रिछ्या करी सगळी बात मांड'र बतायो।

मोवन नै किसना भतमाळजी री रुम सुणायो भर इण ब्याव खातर भधिककता परगट करी। मोवन कैवो—बूढा माईत भवै कितांक दिनां रा ? दो दिन भै ई आपरो बू मो बजाय लेसी, फेर तो घर-बार सगळा थारा ई है, कोई होट रो फटकारो भी देवण आळा नइ रैवै।

किसना—आ बात तो ठीक है, पण मडतै मलै लड़ाई-झगड़ा हुवै ज काम सावळ पार लागर ई पड़ै। तूं तो इसी कळै में आवतां ठीक को समझूं नी। कडकरी कढाई माय सूं भपकतां कीरां भ गर्यां कोई हाव आवै ?

किसना भबार भागरे पीरै ई ही इण कारण भीवसाम सूं भी

मोहन री बातचीत हुयगी। दोनां री सला सूं किसनगोपाळ नै बुलायो। किसनगोपाळ हाथव साफ-साफ बतायदी—म्हारा तो काका रे दिन किसना सूं ब्याव करण रो सोळै आना विचार है, पाछै कोई दुख आवो पण म्हारा बापूजी इण चीज रो ठेट सूं ई विरोध करता आया है अर अबै वां मनै खुल्लमखुल्ला कैय दी कै हूं किसना सूं ब्याव नईं कर सकू। पण इण बात रो भी भरम नं कै म्हारा विचार बदळग्या हुवै। भगवान मई-सलामत राखसी तो काल पक्कायत ब्याव हुसी।

देवीदयाळजी घोर दुखी हुयग्या। पिरथम तो बै किसना रै दूसर ब्याव सूं ई सैमत नईं हा भीखमचन्द रै पण समझायणै सूं चुप करण सूं हंकारो भर लियो। अबै मतमालजी रो रूख सुण'र तो वांरा विचार पाछा फुरण लागग्यो—क्यूं फालतू ब्यावरो टंटो कर'र भूंड रा ठीकरो माथै ऊपर धरू, अर बरणै बाणै सूं माथो लगायनो चढै झिल्लै पासवी यैं।

अठीनै रामचन्दजी भी किसना रै ब्यावरो हंकारो नईं भर्‌यो हो जिण सूं देवीदयाळजी सोचता कै कठैई आ नईं हुवै कै किसना रा ब्याव भी नईं हुवै अर पुराणो सगो रामचन्दजी सूं पतमा भी बिगड़ जावै। मतमालजी राजी हुय भी जावै तो भी डर हो कै जे कदास रामचन्दजी बिगड़ खड़ा हुवै तो काम पार नईं पड़ सकै।

आज रात नै पंचायती भेळा हुसी। नईं जद तो सेठा करण वाळो दिन भर घूमै तो भी ५-१० जणा नीठ भेळा हुवै कारण कोई मजेदार चीज सामनै को हुवैनी। आज तो पंचायती री काटड़ी मिनखां सूं लपालप भरीजसी। पैल्यां बात तो आ कै विधवा ब्याव

सारी समरथमल सागर आयो। वै भणीजीस्या समरथमल पासे सूं तो किसनगोपाल रा दस पगां सूं ठो हुग्यो।

किसनगोपाल पूछ्यो—पंचायती नै इण ब्याव में क्यूं एतराज है?

सिरपंच—थारो ओ ब्याव धरम रो विचार है कांई?

कि० गो०—हाँ, पक्को विचार।

मदनलालजी किसनगोपाल नै गाळ्यां काढी अर हाथ झाल'र बैठायण लाग्या तो पंच मना कर दिया—'आ पंचायती है, अर कोनी अठै गाळ-गुपत नईं हुवणी चाहीजै।' मदनलालजी नै सिरपंच माथै घणी रोस आयो। दोय पीढ्यां अर तमासो देखणियां खिड़खिड़ हस्या।

कि० गो०—हाँ आप म्हारे सवाल रो जवाब नईं दियो के आपनै एतराज क्यूं है।

सिरपंच—आपां री जात में इसो ब्याव आज तांई नइ हुयो। ओ पाप'र इणको काम है अर सास्तरां सूं विरुद्ध है।

कि० गो०—आज तांई कोई काम नईं हुयो इण कारण आगै भी नइ होयो जो तो कोई जवाब कोनी। आज तांई आपां कोई विलायत भी नईं जांवता हा अर जे कोई जांवतो उणनै न्यात बारै कर देवता, पण अबै आपां गांव सूं घणाई विलायत में बैठा है। अबै अप जावै परा, अबै अर पाछा आय जावै। न्यात-बारै रो सवाल ई उठग्यो। थारी ईखिवठ थारो पंचीसन, समाज में कोई कम नइ है। समाज वां में आज आदर री निजर सूं देखै के वे लोग पढ्या लिख्या है, विदेसां में भी आपां री जात रा

मांय फेलावै ।

किसनगोपाल री बात सगळां रै आंटो घाट उतरगी। सगळा मन्दर गुपचुप हुवे ज्यूं सुणन लागग्या। सिरपंच देख्यो—अरे छोरो तो बाजी मार लेणवाळो दीसे है, जद बात काट'र बोल्यो—(पंडतजी नै) "क्यूं पंडतजी आपां रै सासतरां में कठैई विधवा ब्याव रो लिख है कांई जिण में दोस नइ लागतो हुवे।" पंडतजी सागीड़ी त्यारी कर'र आयोड़ा हा। झट सुं'जे मांय सूं पत्तरो भॉत्या मायै चढ़ाय'र इसारा मरदूम रा मन्तरां री बौछाड़ करदी, फेर अरथ भी समझाया कै जिको सख्स विधवा सूं ब्याव करै तथा जिकी विधवा ब्याव करै वै वां सगळां लोगां समेत, जिका इसै ब्याव रो समरथण करै कीड़ा-मकोड़ां री जूण पाय नै एक लाख बरस तांई घोर नरक यातना भोगै।

पंडतजी नै तो पंच मैंमानो ठेराय'र लाया, पण किसनगोपाल रै आ रात दिन रो धन्धो हो इण कारण पुनरब्याव रा पोषक मनगिणती रा मन्तर उण रै कण्ठे हा। जद पंडतजी बोल'र ठेर्‌या, तो किसनगोपाल बोलणो सरू हुयो। भगवानजी री आ ठा मई ही कै उणां रो बटो इण तरै आगो बोल सकै। उणां रै मिन्दाम्य सूं विकास होवै पर भी घरै री बोलणा री सगती ऊपर बात लदूद हुयां बिना नई रैय सक्यो। मन में सोच्यो—'ओ तो रत्ती ई ठ पे पकग्यो, नई धो म्हारै पछै सिरपंच होण लायक आ ई एक आदमी है जिको पूरो तरै लायक है। किसनगोपाल फेर सगळां नै समझाय'र बतायो कै मिनख-लुगाई रा बराबर अधिकार है। मिनख रै बीस ब्यावां मायै भी कोई

आज तक ई बात नई वो लुगाई रै दूसर ब्याव में गड़बड़ करण रा कोई नै कांई हक है ? जे समाज विधवावां नै, खास कर बाळ विधवावां नै, पुनरब्याव करण सूं रोकसी तो समाज रो ढांचो एक दिन छिन्नभिन्न हुय जासी अर इण रा मानी इण तरै रै ब्याव न रोकणियां दुखी जिका एक किरोड़ बरसां तांई भीड़ां रो दू ख में बिलबिलासी जिण सूं घोर दूसरो नरक नई है।

किसनगोपाळ मन्तरी रै सागै पुराणां रा मोत भी सवांपतो गयो जिका पंचायती दूख्या रैया। सासतरां सूं फैसलो हुयो नई कारण एक सास्तर जिकी चीज रो समरथण करै दूजो सास्तर उणी चीज रो मरदण भी करतो जावै इण हालत में सिरपंच दूसरै पंचां सूं सलां में बातचीत कर'र फैसलो सुणाय दियो—

"इण पंचायत रो ओ फैसलो है कै जिको भी सक्स विधवा ब्याव में, कोई भी रूप में सायता करसी उण नै फौरण जात सूं बारे गिण्यो जासी, उण रै साथै जाती रा दूसरा लोग खावण-पीवण ब्याव सावै, कोई तरै रो सम्बन्ध नइ राखेला।" भीड़ में बारे सूं अवाज आवी पंचायती रा फैसलो न्याय री नई है, जे फैसले मायै पचायती कायम रैवण री कोसीस करी, तो एक दिन पचायती आप खतम हुय जावैली।" म्हारो सानी हो हा, हुल्लड़बाजी हुय'र पंचायती उठगी।

## १०

काल ग्यारै है, काल किसना नै हरख हुयणो चाइजै, हिवड़ै में हुलास हुयणो चाइजै पण कठै हरख कठै हुलास ? यो दिन आज फेर मामा आयो जद वी कमरै रो माळो देख'र जीव मायै पासलेट छिड़क्या हा—वीं दिन जे तूं ही पण नावती तो आज जीव नै इयो नकट क्यूं हुंयतो म्हारी गल्ती हुयी जद हूं ई भुगतूं, दोस कीनै दऊं ?—अर किसना इण तरै तड़फड़ांवती ही, भीखलाल कनै, आधी रात रा, सनेसो आयो—'किसनगोपाल री हालत घणी खराब है, एक सौ च्यार-पाँच डिगरी ताव चढ़ग्यो, धकधक। जचार थोड़ी ताळ पैली पंचायती सूं मामा जद तो राजी खुसी हो। समाचार सुण'र भीखलाल रा होस उडग्या। पगां हेठै सूं धरती सिरकगी। काल देवीलियालजी सूं दानै राखी। कोनै जे ना पड़ जावै तो फेर अपीर हुय जावै दुख रा भाखर ढिह जावै। भीखलाल इण भांत चुपचाप टुरग्यो। डाक्टर री हैसियत सूं मोहन नै इण रै घर सूं सागै लेय लियो। मोहन आय'र रोगी नै देख्यो तो मालम पड़ी के मानसी वेदना रै कारण दिमाग ऊपर गैरो धक्को पोंहचो जिण सूं सरीर रा रस संचालण भी ठीक नईं अर गरमी भी बधगी। मोहन सूईं लगायी

मर भीरख बंघायी के कारण बिलकुल ठीक हो जासी। पण थवार मोयन डाक्टर री हैसियत सूं गयो इण कारण कण नै डाक्टरां बिसो व्यापरण ई चोपतो। रोगी ने पही पलाज में मरण आवो हुसी, तो मी डाक्टर रो कैसी 'कोई डर री बात कोनी, थवार ठीक हुय जासी।'

मोयन अर किसनगोपाल रै घर सूं बारै निकल्‌यो तो श्रीवल्लभ नै थ पारै में तायणो नर आमो, साफ साफ कैय दियो—'थाप जे मुसार इलको पड जावै तो भी किसनगोपाल चंगा हुय'र ब्याव करण री हालत में नई हुय सकै। या तो ब्याव सिरकावणो पडसी या रातोरात केई दूसरी लागा बात पकी करणी पडसी।

श्री० व०—हां, थे काल रा दिन भूल्यो, तो समाज म इण बात रा घणो मावो असर पड़ैला। लोग साफ कैसी—ब्याव करूंवां पैली ई मरण लागग्यो जे ब्याव करवो, तो पछै सौवें मर जांवतो।

मोयन—हूं तो थठै रै समाज सूं सावल वाकफकार नई हूं के दूसरा वाकफ रावर किसा है, थे तो सगळां नै जाणो हो, समाज-सुधार सभा में और भी केई ठीक सर लड़का हुसी ?

श्री० व०—ठीक सर में तो थवल भी ठीक है, पण थाज तक नई थवल नै पंचायती में जावण रो कैयो तो कम रो कल ठीक नई लाग्यो इण कारण म्हारो भी जीव वांरो कुच हुयग्यो अर हूं भी पंचायती में आयो नइ सोच्यो पंच फैसलो करसी जिण री घरे बैठ्‌यां ई मालम पड जासी।

मोयन—फैर भी थवल नै बुलाव'र कम सूं बात तो करणी चइजै।

नींद मई आवै तो मई सरी। उठ'र बैठग्यो फेर बत्ती जगायी। आपे में बीजळी रे मळकै रइ एक चानणो पड़्यो। ऊभो हुया मोहन नै जगायो चमक'र उठ्यो। मोहन पूछ्यो क्यूं किसनगोपाळ री तबियत तो ठीक है ? अबार, (फेर घड़ी देख'र) इतो बेगो किया उठायो हाल तो सुता नै घण्टा भर ई का हुयी नी ?

"नई, नई किसनगोपाळ रो तो अबार कोई समाचार का आयोनी पण मनै एक उपाय सूझ्यो है उण सूं, जे परमात्मा चायो तो, काम ठीक हो सकै है।'

'फेर आपां नै और कांई करणो ?"

'पण इण में थांरे पूरे संयोग री जरूरत है।"

"आपनै म्हारे पूरे संयोग में कोई कसर लागे ? नींद तो ई इण खातर लेवी चावतो हो कै काल दिनूगै सूं रात तक काम री भरमार रैसी। थोड़ो थोड़ो म्हारी तरफ सूं आप कोई बात री फिकर मा करो हूं तो आप में झूरण नै त्यार हूं ?"

'आप सूं मनै इसे ई जवाब री आस ही। पण अबै हूं एक अरदास करणी चाऊं हूं।"

"थे रीस ना करूंया। अरदास सबद रो आप सावळ प्रयोग नई करूंयो। आप सूं बडै नै अरदास हुवै या भगवान नै हुवै। बराबर आळा आपस में एक दूसरै नै कदेई अरदास को करैनी। अब मूं है आगी अब म्हैं कैयसी आप बुरो मा मान्या।"

"पण जे हूं कैसूं जिकी बात थे मंजूर कर लेसो तो हूं थांनै भगवान सूं कम नई मांडूं ला। आ ई समझ सूं कै भगवान अरदास

सुसजी।

"य पाले में हो, मनै पक्को भरोसो है कै म्हारै में केई भी बात री इसी काबलियत नई है जिणसूं आप मनै ऊंचो चढावो फर भी जे ई आपरी थोड़ी घोत भी सायता कर सक्यो तो म्हारो भाग्य मान गिणूं ला।"

"गगाजी रो पवितर जल छोड़'र जिको कूवे रै पाणी सूं म्हारौ जिको साक्षात ब्रह्म नै छोड़ र छोटा-मोटा देवी-देवतावां नै ध्याव दुनिया वाने मूरख कैवै।"

हाँ इण भाव रा सूरदासजी रा एक पद भी है, पण इण सूं आपरो मतलब ?"

"म्हारो इसा भवार ब्यू कागलै री तरै हो रयो है जिको समंदर में जाज टुरती वेळा साथै रवाने हुवग्यो। अबै वो घणो ई दूसरै पाणी वहण री कोसीस करै पण पाँखियां थक जावै अर फेर जाज रै सरणै आवै।"

"हाँ सूरदासजी सागो ई पद मैं आ बात कैवै—जैसे उड़ि जहाज का पंछी फिरि जहाज पै आवै मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।"

"वाह रे सूरदास कमाल होड़ग्यो। कवि कविता तो आज भी लिखै, पण सगळो बारी बैठी हुवै ज्यूं दीसै।

"आज तो य बात जादा मालूम हुवग्य अर क मापां रै सनै इण तरै री बातचीत खातर घणो वगत नई है कोई न कोई ठीकसर खड़को हुकावयो है।"

'आप री तो हूं नई कैय सकूं, पण सूरदासजी रो ओ पद जिसा

मारवाड़ मनै अबार लागै है इतो आज पैली कदेई नईं लाग्यो। तुलसीदासजी भगवान राम रो घणो सोवणो बरणन करयो है पण वणां रा रामजी कदेई विस्वामितरजी रा यग्य करावै, कदेई बीर राम र मारीच रे लारे भागै कदेई रावण सिरसै जोधै सूं रण करनै पिरथी आई नूं लाल कर देवै। सूरदासजी सगळां ई भगवान रो बाळ सरूप आपरै सामनै राख्या है। किसनजी रो मोहन रूप ई वणां नै घणो प्यारो हो, अर मनै भी मोहन रूप सूं बेसी कोई नईं दीसै।”

‘आज कविता रो सोवो फूटग्यो दीसै है, हूं तो थानै एक बौपारी आदमी समझतो पण थे तो पूरियोड़ा कवीरो निकळग्या।’

‘म्हारो मतलब तो आप समझग्या हुसो।’

“इस्कूल रै दिनां मैं कदेई पोथा-पोथ कवियां नै पढ'र जिका मूळ भावण्या वे तो बीत गेरा गया परा, हालतां रै कविता सूं कांई लेणदेण ?

‘किसना रो हाथ हूं आपरै हाथ में देवणो चाऊं हूं आ अरदास समझो हुकम समझो, जचै ज्यूं समझो।’

किसना रै बरताव बोलचाल सूं मोहन मैं संतोस हो पण उण सूं ब्याव करण री बात उण रै ख्याल मैं कदेई नईं आयी। एकाएक ओपाराम कनै आ बात सुणी तो एक बार तो आंख्यां फाटोड़ी ई रैगी पण फेर विचार करयो—ब्याव तो मनै करणो है, टाळणो तो टाळणो कोनी फेर कांई हरज है जे हूं किसना सूं ब्याव री बात ऊपर विचार करूं तो। ओपाराम नै जवाब दियो कै सेठ साब सूं सल्ला कर'र पछै बात कैय सकूं हूं।

म्हारै घर में किया राखणो चावो, म्हां सूं तो एक दम न्यारो हो जासी ?

मी० च० —म्हारो विचार मोवन बाळा जी साथै किसना रा [illegible] ।

रा० चं० —मोवन साथै ब्याव करणो चावो ? ब्याव रो तेवड़ त्यारी तो घर में कांई करियोड़ी कोनी, पण घर रो टाबर घर में रैसी । मंजूर है मनै सोळै आना । म्हारै लायक कांई सेवा ?

मी० च०—आपरै इण भैलाप रा धन्यवाद हूं सात जनम तक नईं उतार सकूं ला ।

## २१

मोवन नै देख'र नईं तो ई किसना रो रूं-रूं हरखीजतो काळजै में ठंडी सीळक पड़ती, अंधारै रो चानणो अर निरासा री आसा बण जावती, आज तो बात ई क्यूं पूछणी ? वा चोज जिको इसो मानो हो मोवन जिण नै किसना मिनखां में देवता मानती आज किसना री उजड़ियोड़ी दुनिया नै फेर आबाद करण आयो है, अंधारी नगरी नै रोसनाय करण आयो है, काळजै रै कुमळायोड़ै कंवळ नै फेर खिलावण आयो है अर किसना रै भाग में कुंवारी छोरियां जिसी पुरती

भी हो किण सूं भमपिभाऊ सिरपंच रै प्रति भरोसै री भावना भौर भी तीखर हुयगी। मतमालजी मन-मन में सरस्सुती माता रै सवा रुपियै रो परसाद बोल्यो–मां आप म्हारै कण्ठां में बिराजो।—होठ खुल्या—

"सारा सिरदारां सूं घणा-घणा सेवा सिलाम।

ईं एक भणपढ़ डोकरो हूं इण कारण जे बोलण में कोटपां कर जाऊं तो थे कांई गिलारो ना करथा।

"आप जाणो हो कै जद सूं समझ पकड़ी, हूं पंचायती री सेवा में बराबर लागोड़ो हूं। म्हारै ओळै ग्राम सारू जणै किसी सेवा री सगेई सेरा रही। पण इण सेवा रो भगवान्ईजवो फल भी मनै मिलग्यो जिण री ठा आप सांच सूं लोगां नै हुसी। जिना कैमे पगै भी किया ?

"कोई मानता को हुयानी, दरस को हुयानी, जुग को हुयानी। परसूं री बात है, परसूं, जद हूं मुजरम हो भर भामपिभाऊ सिरपंच हा रामनाथजी। सगळी दुनिया जाणै है कै विधवा-ब्याव रो जे कोई नांव भी राख्यो हूं तो ब्याव रो काम्मो मूं डो करदियो हूं। इण रै भनतरांव रामनाथजी भरी पंचायती में म्हारो घोर अनादर करयो कै भो भर थेमी पंचायती है। तो कांई मनै आ ईं ठा कोनी कै किसो भर है भर किसो पंचायती है। रामनाथजी नै भा ठा नईं हुसी कै थे जलम्या जिण सूं पैली हूं पंचायती करण लागग्यो हो। भर थै जे जलम्योड़ा हा तो धोती को खोंमी हुसी भी, पचायत नागा फिरता हुवेला।

खैर, भो बातां में भबै कांई पड़यो है। म्हैं तो पणाईं बरस पंचायती करी भर म्हारै किसी कोई कांई करसी, पण मनै ठा पड़गी कै भबै आप लोगां नै म्हारी पंचायती री जरूरत कोनी, तो हूं किसो

म्हाराणी बीनाखियों पंच थोड़ो ई बणू हूं ? हूं म्हारे घरे बैठ जासूं। बस इणी ई बात कैवण खातर म्हैं आप लोगां नै भेळा करचा हा। अच्छ्या, गळती माफ करचा। सगळा सिरदारां सूं राम राम।”

सभा में सबसूं लांठो आयम्यो लोग तो सोचता हा कै इणी ओर दार भीड़ भेळी हुयी है तो मोहन-किसना रै ब्याव री समीक्षा करणी हुसी, पण बात निकळी दूसरी ई। रामनाथजी आप री सफाई पेस करण सारू ऊभा हुया—सारा सिरदारां सूं म्हारा राम राम। परसूं री पंचायती में जद मदनलालजी आपरै लड़कै किसनगोपालजी नै बगस लागम्या तो म्हैं नमरता सूं मदनलालजी नै इण तरै मदद करण री अरदास करी जिकी हरेक सिरपंच नै जरूरत माफक करणी ई पड़ै। आ बात साफ समझते थकां भी कै इण बात रै म्हारै आचरण में कोई गळती नईं ही, जे मदनलालजी नैं केई तरै रो दुख हुयो तो मनै म्हारा बोल पाछा लेवण में कोई आंट कोनी।

मदनलालजी नै तो आज और कोई कैवणो नईं है इण कारण ईं आपनै वार विराज हूं कै परसूं री पंचायती में आपां जो फैसला करचो हो कै बिखणा-ब्याव में जिको भी सायता पूगावै आपां वै सूं रोटी-बेटी, होक्कै-पाणी रो संबन्ध नईं राखणो है। आज जिको ब्याव हुयो है, वो केई सूं छानो नईं है।

सारे सूं अचाण्यां आयी कै साफस समझाय'र कैयो समझाय'र कैयो पण नै रामनाथजी तई पूगी जिण सूं पैली मारक आखें तार बोल दिया। पंचायती भंग हुयी।

—★—

# ११

गीतां सूं मोहन रो ब्याव हुवणो, नईं हुवणो बराबर हो। गीतां थोरो काळजो बाळ'र थी। इसा भव्य-पुरुष कदेई नईं दीस्या के जद मोहन री चग आतमा ठारी हुवे। पण किसना ? किसना ने कांई नईं करे तो भी चग रे भेसाण रे पाड़ सूं मोहन छप्योड़ो है इसो भेसाण जिण सूं बडो और कोई भेसाण नईं—मायड़तान या जीवणरखा। मगामा सूं खास बात तो आ के मोहन किसना रो अर किसना मोहन रो। इण आत्मीयता री भावना सूं एक दूसरे ने आपस रा गुण हजार गुणा सुखदायी लागण लागग्या।

सीताराम रा टाबर पैलो भी किसना नैं जीव सूं प्यारा लागता अर अबे भी विसा ई लागे। पण सुन्दी री निजरयां में अबे फरक पड़ग्यो। बिचारा किसना जे सारी पोथी भी ऊथळदे पैली तो सुन्दी नाक में सळ घालती—कैने देखाम्सी ? पण अबे आ बात नईं है। किसना पचीसारी बाबरी कोनी सूनी कोनी। सीताराम ने किसना भीखाराम नै दे'र नोकरी भी दराय दियो, इण कारण भी अबै सुन्दी रो मूंडो चढै नईं। अबे जे राधेश्याम बदमासी करे, तो आप र किसना ने ओळमो—देखा, ध ई मे कांई देखो कोनी ? अन सिखा'र समदावोनी। पण किसना मामूली बात जाणर टाबरां रा काम

तारका सगळा रिकार्ड तोड़'र मोवन आपरो नुवों रिकार्ड कायम करयो हो मोवन अर उण रै कालेज सारूं आखर, पचीसवें बरस री बात ही। मोवन रै अबै तारां रो तार बणग्यो, चिट्ठ्यां रो भी तांतो बंधग्यो कम सूं कम इत्तै अर तद केई बड़ै सरकारी दफ्तर में आवै जित्ती डाक मोवन रै मितरां अर सनेइयां कनै सूं बधाई सरूप परै उतरती। सगळां नै न्यारी न्यारी हाथ सूं चिट्ठी लिखणी आपरी पौंच रै बारै समझ'र चिट्ठी रो मसोदो बणाय'र छापण खातर देय दियो। पण अखबारां रा संवाददाता भी आय ढूकिया। तद मोवन आपरै सगळै मितरां अर हितचिन्तकां नै, बधाई ऊपर धनवाद रो समाचार छापां में निकळवाय दियो। मोवन रो ताजो फोटू भी छप्या साथ में छप्यो संखिप्त जीवण-चरित भी छप्यो। उण रै साथ-साथ फोटूग्राफर लोग किसना रा भी फोटू खेंचग्या अर विधवा-ब्याव रो करम मोवन उठायो जिणरी खासा बडाई करी।

मोवन आपरै सगळै सहपाठ्यां नै मन्याई सूं अलवर आवण रो नूंतो दियो गोठ रो पास री खुसी में। दीनानाथ चम्पा हरि हरीश, और ई किताई साथी, कोस सूं साथी री गोठ जीमण आया। किसना घर री मालकण, आयोड़ां रो आदर सत्कार करै इण सूं मोवन घणो राजी।

आपरै दूसरै ब्याव री सूचना मोवन आपरां नै नई दी इण रा ओळमा सैवणा पड़्या। पण मोवन कंवे-अबै दोनूं मास भेळा ई जीमसां—दो दिन ठैरता च्यार दिन ठैर जाणा, च्यार दिन ठैरता आठ दिन ठैर जावो। आज फेर चम्पा आपरै कोयल-कण्ठ सूं सभा मे

पसोसोच तो हुसो ई भांवतो थोड़ो घोत सोच भी। जे माईपो-बाईपो भर ग्याव माध्य बीमण ने भेळा तो तबै सात सीवड़ां, किरिया, बारियै छम्मासी भर बारैमासी मैं दस हजार रुपियां सूं कम भरचो नइ बैठता। भै रुपिया हा क्यूं ई ठावरम्या।

मशान में सागोड़ी चरचा चालती ही—ग्मर भर रामचन्दजी ग्यात बीमतो किरपा—पर-सिगरी, भर मरघो अब सारै सूं पूछ रहगी। इसे माजने रे धणी ने कुत्तो किकै क्यूं बिछण ने मइ जावसो हा। अब भाप दूसरा ने मइ सुणावै इसे बावयो ऊपर पूछ है। मोहन कनै भा सफ बरोबर पूगती अब मोहन कैवतो—हूं कांई कहूं भाई नइ बीमे उण ने किस्यां बीमाइजै, छोटा छोटा टाबर तो थामी जिकै अबरदस्ती मूंडै में कवो ठूंस दे। भर जे मन नइ हुवै तो टाबर भाप मूंडै में टाम्बाड़ो कवो पाछो थूक दे। खैर! मोहन बारवैं दिन भाछा-भाछा पण्डतां ने बुलाया भर बणां ने भोजन सूं जिरपत करया। पण्डत लोग डट र जीम लिया, बांवती वेळा कांसा पर पुरसा लिया। पण पण्डतां ने बीमावण में तो पचासेक-पौंचसी रुपिया लाग्या हुसी। सेठजी रै बारे टाउपोड़े रुपियां रो मोहन सदुपयोग करणो चावतो हो उण रो ख्याल हो एक धरमसाळा बणा थप दे। किसना री राय ही। किसना सोच में पड़गो हां रुपियो किण तरै लगावणो चइजै ?

किसना राव रा सुती जद भी इण बात ऊपर विचार करती रैवी। सायद नींद में सपना ई इण बावरो भायो हुसी, पण राव रात में उण रै माथै में एक बात सूझी, जिकी रो उण ने भरोसा हो कै

मोवन रै हाथ आसी। किसना चांदनी के मो रुपियो एक धर्मार्थ अस्पताळ रै काम लगायो जावै। सेठ साब री कोठी खासा बड़ी ही उणरा केई कमरा अस्पताळ रो काम आछी तरै दे सकता हा। इण अस्पताळ में डाक्टर हुसी मोवन। अर मोवन को सुझाव किसना राणी कनै गुण्यो तो उण री सूझ री मोकळी सराहना करी अर फौरन वारै सूं दवाओं अस्पताळ री जरूरी चीजां अर मसीन्यां मंगाव'र काम टंच कर दियो।

अस्पताळ रो नांव राख्यो—"रामचन्द्र धर्मार्थ चिकित्सालय।" स्वास्थ्य मंत्री रै हाथां सूं इण रा उद्घाटन हुयो। सगळे सैर में इण बात री खुसी मनाईजी पण मोवन री जात रै लोगां लोग देखाव्य सारु वीं दिन आम्बे पाव बांधी। स्वास्थ्य मंत्री मोवन रै इण काम नै मोकळो सरायो अर अखबार निवास्यां रा भाग बड़ा बखारया बठै हुसो धर्मार्थ चिकित्सालय खुल्यो, जिण में मोवनलाल जिसो लायक डाक्टर इलाज करण लाग्यो अर जे जरूरत हुवै तो रोगी रै घरे देखण नै जावै, तो भी फीस नई लेवै। स्वास्थ्य मंत्री रै उद्घाटन भाषण में बड़ी बड़ी बार ताळ्यां बजाय'र लोगां घणो सरायो।

सैरादं बठै बठै मगता आवेई पूग जावै अस्पताळ खुलै बठै रोगी आपई ढूक जावै। फर धर्मार्थ! धर्मार्थ अस्पताळ में तो ज कोई मोबो कम्पोडर डाक्टर बण र बैठ जावै तो भी केई रागी तो बिन बुलाया आप ई जावै। मोवन साबर तो कम्पोडर री बात लागू ना हुवती ही, उण रै बराबर योगता वो बठै रे सरकारी डाक्टरां में भी नई ही। सरु में मोवन कोठी रा च्यार कमरा अस्पताळ खातै हस्या

पछ रामनाथ जी नै पाछी चिट्ठी लिखी कै म्हारै सैर म इण इलाज सारू घणो हुसियार आदमी मालूम है — डॉ० मोहन लाल – पर म्हारो हालत इमी नाजुक होसै है क म्हारो इणी तरै आवणो सतरै सूं खाली नइ है। म दुखावता तो हूं सायद म्हसफर म्हारा आंवता पण म्हारा अठै केई सीरियस केस' हाथ में है जिणां नै छोड'र हू इलाज नई आ सकू ।

रामनाथ जी नै मरणो कबूल हो पण मोहन सू बात करणी भी मंजूर नई इलाज करावणो तो पछलो बात है। रामनाथ जी नै भो रर भी हो कै मोहन उणां रा इलाज करसी का इनकार कर देसी।

रामनाथ जी री बड़ आपरी बेटी कमला नै सागै लेय र रात रे अंधारे में किसना रै घर ल्यानी टुरगी। जद किसना रो घर आयो तो मां प्यारा प्यानी मारग्या लागो अर किसना रै घर मे बडरत उणां नै घाई देखै तो नइ है। इण तरै रा हाव भाव देख र गळी रा कुत्ता भाड़ा भाड़ा भुसण लागग्या जद वै दोनू झट देण्यां किसना रै घर में बड़ग्या। रात रा अणुसैंधो लुगायां नै देख र किसना समझगी कै कोई न कोई रागी ई दुसी। कमर म सा'रक बैठाय र पर आवण रा कारण पूछ्या।

कमला री मां सणी-सणी कैयो—आप मन आपरी बा दसी नी।

किसना— इलाज सारै इण बातरो कोई असर नइ पड़ै आदमा आवै ना भोमळो।

कमला— म्हारा पापूजी बमार है पर म्हारा इलाज डाक्टर माच

तो वो किसा मापां री म्हात रै माय हो ? आपरा रै मौडै ऊपर इसी बात रो विचार नईं करणो चाईजै। आप कैवता हा नी कै मोवन साब री सम्चाई रै पी एम भी मसी सोमा लिखी है।

रा ना — इण बात में तो कोई सक कोनी कै मोवन साब हुसियार डाक्टर है। विनूगी सिमया कठैई ईसो मस्र सागीनी मोड रैवे। बारला रोगी भी मोकला आवे पण मोवन नै व्यावहार रा पैसला गहै ई हा दियो हा, अबै वड्डै री भावना सूं, हूं मई मरतो हुयूं तो ई वा मार द। आपरै बैरी रै हाथ में जान किया सुपीजै ?

कमला — डाक्टर साब रै मन में तो आप सूं पचायत बैर को हुमी नी, वै लोग तो आपरै काम-काज में, फर टैम हुबै अर रात-फूर में इणा मगन रैवे कै बैर-विरोध री वर्चा नै मौको ई नईं आवै।

रा ना — तनै कांई ठा भी बारली री गू बीनै कियां बावै ?

कमला बाली कानी, अर रामनाम जी हूसर पूछ्यो बताव तो सरी, तनै काई ठा कै बा बैर राखे क नईं।

कमला — थोरी मादगी रै कारण म्हामै एक मिनट ई चैन कोनी, आगा आगा म्हूं मां-बटी फिरती फिरी। कमा डाक्टर साब री बऊ सूं मिलर्बा अर बर्बा कैया कै डाक्टर साब वा आपरो जीवण समाज रै अरपण करमोड़ा है, फर वै कांई बैर राखसी ? विण मिनख रा विचार इणा ऊंचा है कै वा

रागी करने सू फीस भी नां लवे को काम्दवे में कपट-गोंठड़ी करेई को रालैनी।

रा० ना०— जबे काम या बने गयां ही मने पूछयो ई क्यनी ?

कमला—हरेक बात में आपने कांई पूछां फरसत् थां ने बोलयो पड़े। फगार इसी बात करो हो किसी भी ठीक कोनी। काल नव बजा अस्पताळ चालण री टैम केय'र आयी हूं।

रा० ना — टैम ई दिखायी, मरे था र कमलिया चटा (रामनाथ जी राजी हुय र कैयो ) ठोक, चालसूं थारे जचगी तो।

दूसरे दिन नव रामनाथजी एक मायखे ने साथे लेय'र अस्पताळ गया तो डाक्टर साब सू रामासामा करया। डाक्टर साब आछी तरे देखभाळी करी पण मामळा निराशाजनक हो। कस बौत बिगड़ग्यो हो। डाक्टर साब मायखे ने एकला लेय र कैयो-जे इलाज नई कराओ ना संठजी २० २५ दिना में पक्कायत खतम हुय जासी, अर जे कराया तो भी ठीक हुवण री पाँच की सैकड़ा आस है, पचाणमें की सैकड़ा ठाड नइ हुवे जिसो कस है, साबक सोचलो विचार लो।

रामनाथ जी रो पेट दिना-दिन बसो फूलतो हो। जबे खास मायखा संपसाक ई हा पेट में हवा रे बहन खावर ठौड़ ई कोनी रैयी नो। रामनाथ को देखयो— इलाज नई करायां तो मौत चीसे ई है पट में मन-पाणी गयें मैं इत्ता इत्ता दिन हुयग्या आखर इयां किताक दिन गाळो जिकसी इण हालत में जे डाक्टर रो इलाज करायां से बच जाऊं तो मुभीं अमारा भाग। इलाज री जचगी।

काल रामनाथ जी रा अपरेशन करणो है इण कारण मोहन

बारली चीजां री आव सूं ई त्यारी करण लागग्यो। सरकारी डाक्टरां ने भी आपरा डाक्टर कैय दियो। रामनाथ जी रै अपरेसन री चरचा, सगळै सैर में फैलगी कारण, इण में डाक्टर री चतराई री ठा पड़ण रो सवाल हो। आखो सैर दूसरै दिन अस्पताळ आगै भेळो हुयग्यो। आज भतमाल जी भी आया। भीड़ सूं सड़क रुकगी। भतमाल जी रै आ दिनों में रामनाथ जी सूं अणती बणती ही पण अब वणां री इसी हालत देखी तो मन रो वैर भाव छोड़ दियो। रामनाथ जी अस्पताळ में आया तो स्ट्रेचर माथै सुवाण र वणां नै अपरेशन रै कमरे में लेयग्या। आपरा डाक्टर दो सरकारी डाक्टर भी आयोड़ा हा। आ पैली बडो भारी अपरेसन हो जिण में मोहन सफळ नईं हुवो तो आगपर में वण नै डाक्टरी धन्धो करण री नौबत आसकै, कठैई दूसरी जागा "रामचन्द धर्मार्थ चिकित्सालय' असैई खोलो। इण रो कारण ओ है कै इत्तो जबरदस्त केस ओ पैलो ई हाथ में आयो। इण सूं कम खतरै रा केस तो मोहन रै हाथ नीचे सूं सैकड़ूं निकळ ग्या हुसी। रामनाथ जी री तरफ सूं अपरेसन री जगत वणां रै आदमी री हैसियत सूं भतमाल जी ई अपरेसन-भवन में ऊभा हा।

अटल आतम-विस्वास रै साथै मोहन सरूआत करी। रामनाथजी नै कैयो—"आप कोई बात रो फिकर मा करज्या, भगवान चायो तो थे ५५ बरसां रै जवान दाई गळ्यां में फिरण लाग जासो। म्हारी तरफ सूं थांनै साजा करण में हूं रत्ती भर ई कसर को छोडूं नीं रामनाथजी आंख्यां री पलकां सूं आ सैन करी अइ मे कैयो जिकी बात हूं समझग्यो। अबै मोहन री सरधा को रैयीनी। आज राते

सूंघणी रो समान करयो सूंघावते ई झट बेहोसी छायगी।

एक डाक्टर तो नाड़ झाल ऊभो हो। मोवन हाथ में नसतर लियो अणरसीऊ पेट खोल दियो, तो मांय एक चमत्कार दिख्यो। पसवाड़ै डाक्टर रूप रै भी धीरे देखण रो सका थी। पण मोवन समझग्यो के आ चोरा देखण री चीज नईं ही, आ तो असली गाँठ ही जिकी दुख देवती ही। गाँठ घणी सारी रूप ने औजारां सूं बारै काढण री कोसीस करी तो काढ़ी कोनी। आखर मोवन आपरै हाथां सूं रूप गोळ गोळ हाथै ने उठाय'र बारै काढ्यो। बारै काढ़ते ई नाड़ मायलिये डाक्टर रो मूंडो उतरग्यो, मोवन रो भी उतरग्यो—दोनूं हाथां री नाड़ एक दम गयी परी। पण रूप चीज रो मोवन पैली अनुमान कर लियो हो इंजक्सन त्यार हो, झट दोनूं भुजियां में एक एक लगाया नाड़ पाछी आयगी। डाक्टर समझ्यां हुयग्या। चीरै री जागा पाछी टरै टांका लगाय दिया। मांयलो रोग तो बारै काढ दियो पण नाड़ फेर बन्द हुयगी। अबकै बतरी बेसी लगायो पण फेर मोवम रो सूवां लगायी। नाड़ पाछी चालण लागगी। सरकारी डाक्टरां ने पसवाड़ो में सूया डगडग रो कैंवे'र आप रूप खोखै में तोल्यो पूरो साढी सात सेर। फेर रूप खोखै ने एक बड़ी मरतबान में राख'र बारै ऊभी जिकी भीड़ ने देखायो जिकी के अपरेसन रै नतीजै खातर आंख्यां फाड़ बाट जोवती ही। मोवन कैयो—पेट मांय सूं जो खोखो निकळ्यो है जिण रो वजन साढी सात सेर है। अपरेसन तो सफळता सूं हुयग्यो पण हाल रोगी री हालत खतरै सूं बारी नईं है। बे च्यार रो दिन आराम निकळग्यो, तो फेर कोई डर री बात कोनी। इण

कोयै नै बारै काळजा मे भी लोगां नै कम बतराई नई लागो। सगळां री जीभ माथै आ ईं बात ही—धा रे डाक्टर! डाक्टर कांईं एक चीज है। जनता रै भाग सूं जीवतो रै। आ अवाज ज्यारां पासो सूं आवती ही। मतमालजी मोवन रा पग झालया लागा—थे डाक्टर नई साख्यात भगवान हो। मोवन री नमरता आज भी सदेई जिसी ही—आप माईतां रो आसीस है। मनै तो कांईं करणो आवैनी।

दूसरै दिन भी रामनाथजी नै चेतो नई हो तीसरै दिन भोर हुंवते ईं पलकां हिलती दीसी मोवन माथै ऊपर हाथ फेरया—आंख खुली, खुलते ईं मोवन एक टेकता हुवै ज्यूं रामनाथजी री आंख्यां जम राज सूं जुध्ध में जीतग्यो हुवै ज्यूं दीस्या। निमळै हाथां नै जोड़'र आदर थोड़साक उठाय'र रामनाथजी कैवो— 'था मनै उबार लिया।'' मोवन आपरी आंख्यां गंभीरता सूं मीच'र हाथ सूं चुप रैवण री सैन करी। अर रामनाथजी कैवो 'म्हारै पसवाड़ै में पीड़ घणी।' आ बात मोवन री समझ में नई आवी। अर पसवाड़ा देख्या तो घणो परेसान हुयो जिण सरकारी डाक्टरां नै सूवां मोकळई ज्यां केई पांसळी री हड्डी में खोमो देय दिया क कांईं हुयो जिण सूं दोनां पासी गुम्मा बटक्या लागग्या। मोवन कैयो हूं अपार मिटाय दूं आगलै दिन तक था पीड़ घणीसीक मिटगी।

कमला अर कमला री मां कसर-कूं कूं, धूप-दीप फळ-फूल सूं तो मोवन रो पूजन नई करयो पण वणां जिण बोलां सूं जिण भावनां साथै मोवन रै चरणां में सरधा रा पुसप चढाया वण वरै सायत ठाकुरजी री केई भगतोक मूरती रै को चढायानी। कमला रै तो ए

पसीज्यां बिना को रैयो मी । मोवन कमला नै कैयो के को रोग समूळो कटग्यो, कोई पाछो नइ हुय सके, अर थोड़ा दिनां में से साम सारा-साजा हुय'र दानजी रो काम-काज करण लाग जासी सेठ साब दिनोदिन ठीक हुवे है। इलाज रै दिनां में अलमजी मी रामनाथजी रो कुसम्यपद पूछण साक आवता अर अबै रामनाथ जो अर अलमजी दोनां रै हिरदां में मोवन सावर गाढो सनेह हुयग्यो। बणांरा आपस रा सम्बन्ध भी दिनोदिन घाढा मीठा हुयग्या थोड़ा दिनां में रामनाथजी ठीक हुय'र राजी-खुसी आपरै घरे गया।

अबै मोवन री बाव-ल्याव रा मी रोगी बधरी असवाम आवण लागग्या दूसरा रोगी मी सरकारी अस्पताल छोड'र मोवन कनै आवण लागग्या। इण सूं मोवन री अरशताल री जगा फेर सांकड़ी पड़ण लागगी अर सरणो आंव्यो जिण सूं एक गुणो ऊपर निकलग्यो।

हुय कै वे मिनखां रै दुख नैंत री परवा तक नईं करै उणां री मूरखता ऊपर जे मन-मन में मुळक दवे तो बात न्यारी है।

कदेई कदेई पोथी बांचती-बांचती किसना विचार में पड़ जांवती। पोथी रास देवती अर सामली भींत ऊपर ताक बोकरती। गंभीरता सूं विचार करती—लुगाई पराधीनता रै कारण ई मिनख रै हाथै हार मांडै। धणी हुय जिसी तो काई बात कोनी पण अर छोटी उमर में विधवा हुय जावै अर पेट भराई रा पूरा साधन नईं हुवै तद धणीहीण लुगायां नै उदर-पूरना खातर बारै निकळणा पड़ै। उणां री लाचारी अर गरीबी रो लाभ उठावण सारू मिनख भलाई धीठा अर निलज्ज है। जरूरत-मन्द लुगाई नै कई लोग पइसा में मोलावै अर अपजस रो बीज बोय'र इसो नातो तोड़ै कै कदेई सांधवा ई नईं हा।

कदेई-कदेई तो किसना पारकै दुख इती दूखणी हुवती कै नैणां सूं नीर झरण लाग जावतो। सहानुभूति रो सागर उणरै हिवड़ै में हबोळा लेवण लाग जावतो। मोहन उण हालत में देखतो, तो समझ जावतो कै आज कांई बात है। आज भी किसना री आंख्यां लाल हुयोड़ी ही, मूं तो उतरयोड़ो हो। मोहन नै देख'र मुरझायोड़ै मुखड़ै नै खिला-वण री चेस्टा करी, पण मोहन कैयो—लुगायां रै आंसुवां री जड़ असिक्षा है। जितरी तईं वै पढ़-लिख नईं जासी, उण वगत तक दुख आंसुवां रो अन्त नईं आवैला। कोरा सुझावां सूं अर आंसुवां साफ करया सूं तो कांई इलाज हुवै नईं। रोग तो जद ई मिटै जद कै उण रो ठीक इलाज हुवै।

हुवे जिण में लुगायां नै पढ़ाई-लिखाई री शिक्षा रै सिवाय हाथ रो काम-काज भी सिखायो जावै। लुगायां आपरो आपो संभाळसी आवायां शिक्षित हुयां सूं टाबर भी शिक्षित हुसी अर इण सूं देस री सांगोपांग बढोतरी हुसी।

म्हैं आपरै सामनै प्रकास रो तारो तोड़ण री बात नई करी है, जे आप ध्यारता सूं दान करो तो आप देखसो के आपरो रुपियो किसो वैगो ऊगसी।

किसना अपील आपैसामी में देय दी। जद अप र आसी तो निगे साफ एक पानो मोचन नै भी दियो।

जनता री सेवा ई मोचन करतो अर जनता री सेवा किसना करती। पण मोचन इसो रूप्योड़ो रैवतो के वो निश्चित टैम सूं वसी कोई-छीं'क ई दे सकतो। किसना रै सामनै टैम री पाबन्दी जिसी कोई चीज नई ही। उण री हर घड़ी, हर पलक सेवा खातर अरपित ही। जणांनै पाली तो उण री सेवा ही'ज पण मरदानै पाली भी उण री दिव्य मूरती रै दरसण सूं रोम्यां रा रेमा आखा हुयण लाग जांवता। उण री बात-चीत सूं वो माथा ऊपर रामनाय महाम आगली हुवे ज्यूं लखांवतो।

इण कारण जद किसना रै नांव री अपील जनता रै सामी पूगी तो जनता चपी हरख कोड सूं उण रो स्वागत करयो। दूसरै ई दिन सूं मन री इण तरै विरळा हुयसी सह हुवी कै उण रो हैसाब राखण नै मारीसड्या रै खातर म्हारा गुमास्ता राखणा पड़्या।

नारीशाळा सारू जिकै उछाह सूं धन भेळो हुयो उण तरै आज तई केई दूसरी संस्था वास्तै को हुयो हुसी नी। पइसो हुवै जठै ट्रस्ट भी बणै। मदनमालजी अर रामनाथजी दोनूं नारीशाळा रा ट्रस्टी राजी-राजी बणग्या। इण री पूंजी रो इन्तजाम इसो आछो के कोई आंगळी भी नहीं उठा सकै। संस्था रो उद्घाटण करावण सारू केन्द्रीय सरकार रै केई मंत्री नै बुलावण रो विचार हो अर जिसना इण बात ऊपर मोकळो जोर भी दियो पण नगर-निवासी सगळा चांवता के नारीशाळा रो उद्घाटण जिसना रै कर-कमलां सूं हुवै। आखर जनता री आवाज री अवहेलणा करणी भी ठीक नई समझी, जिसना हामळ भरली।

इण नारीशाळा रै उद्घाटण रो प्रचार च्यारां मेर दो महीना आगूंच ई हुवण लागग्यो हो इण कारण ठीक दिन माथै पारखै दरसकां री भी अपूरब भीड़ उमड़ी। कुम्भ रै मेळै जित्ता आदमी जे नई भी आया तो रामदेवजी रै मेळै जित्ता जरूर आयग्या हुसी। रेल विभाग भी इण मौकै ऊपर आवाजाव रो विशेष प्रबन्ध करयो, अर करणो भी पड़ियो।

आज सगळे जगे री जीभ ऊपर जिसना देवी रो नांव है, जिसना देवी रो। आखै देस रै दरसकां री हाजरी इण बातरो सबूत दियो के इण तरै री नारीशाळा री जरूरत आखो भारत नै नई आखै देस नै है।

जिण दिन मैं एक बार मदनमालजी विराट सभा भेळी करी ही,

क्यों आगा बाज मसवीठ मायसा मध्ये हुयोड़ा हा । सगला बाप आपरी ठौड़सर पैठा हा, पण विणकी सुरसी हाल खाली ही। मार्बा रै देखते-देखते केई मिनख-लुगायां रो एक झुंड माया मर मरास गूंज उठ्यो – किसना देवी री जै। किसना विणकी मुरसी मार्थं बिराजी, मोड़ीची क हाम में गम्ये मालावां सूं काटो ढकीजग्यो। जै-जैकार हुयां पछै सगला चुपचाप हुयग्या। किपना देवी ऊभी हुवी। सगलां नै बची नमरता सूं नमरकार करवो फेर आपरा लिखित भाषण बांच्यो, जिण रो सारांस इण तरै हो

आसा सूं बसी आप लोगां म्हारी सुणाई करी इण वास्ते रै सामो म्हारो माथो घणीघणी वार झकझवा सू झुक्यो जावै।

आप नै इण बात री खुसी हुसी के इण संस्था रो मुख्य उद्देस माथी बात नै स्वावलम्बणी बणावणो है। इण रै साथ-साथ भी पूरो ध्यान राख्यो जासी के आजकाल रै कालेजां में छोरा छोरयां री पढाई सारै हुवणै रै कारण शिक्षा-पद्धति में जिका दोस आवग्या है, बणां नै इण में ठौड़ नइ मिलै। इस संस्था में मिनखां रो मनेरा सफा मन्य रैसी।

'विधवा-व्याव इण संस्था रो उद्देस तो कोनी पण जे कदास इसो मान हुसी के कोई असहाय विधवा व्यांरो पासी सूं छूटीवै है अर वण रै केई रो भी आसरो नइ है, अर बिना धणी दुनिया में रैवणो दूसरे मरी मिनखां रै कारण असम्भव हुयग्यो अर दूसर ब्याव करणां सूं वण रै जीवण में सुख रो संचार हाणै री सम्भावना है तो

नारीशाळा इसो कोड़ां ने सदेई, ऊमर भर तक, पगां में हिवरोमण रैवै धेनी।

'हूँ म्हारै पति देव रै सामर भी घणी कृतज्ञता प्रगट करूं जिणां मनै इण नारीशाळा रो सुझाव दियो।

'आप सारां सूं म्हारी आ अरज है के जिण कोड सूं आप इण समारोह में सामल हुया हो उणी चाव सूं इण रै कामां में ठट लई रिखवारी तेसो मर अ समसमय में कठई चूक हुवी तो उण सूं सपन करसो।

इण्ही सिरदारां ने म्हारी आ हाथ जोड़ र अरज है के वे कोई इसा गलाज्ञ नइ करै कै संस्था रै नांव नै धक्का पूगै।

आज रै समारोह रा सभापति सेठ रामनाथ जी हा। वणां हिमना देवी नै मानचीतार धनवार दीवी। पर आया जिणां नै मराय नै भी दीरी।

इण रै साथ साथ उणां रै सामी घामना करी कै नारीशाळा नै अरसी हजार तीन सौ सांठ रा पैसी सूं इ दरम हुरपा जिग्या म मगर सूं पैसो साथ कठारो गुदरी घरो बमला रा है (नगद रा री अड़गड़ा)। धड़ सिटनी बगत हिमना देवी री तो घणो जयकार बाजी ही, पण रामनाथजी रा नांव मो कई नार गुणाया।

~~~
~~~

## २७

आज देवीदयाल जी भी समारोह में सामल हा। किसना नै इण भाव रै आसण माथै विराज्योड़ी देख'र आपरी चूड़ी छाती रा बोरा किवाड़ मणमांणतै हरख रै जोर सूं टूटण लागग्या। पण वा प्रेम सूं काळजै री मा हालत हुंवती तो मेख सैणपणो साझ'र काम सूं भरीज बांधवा जिण सूं काळजै रो जोस कांई ठावो पड़ बांधतो। बरे जांणी बगत मिलै जिका ठगग्या किसना रै इण काम रै कारण देवी दयाल जी नै बधाई देवै—ओळख्या जिका भी अर नईं ओळख्या जिका भी—कारण मैं सबै ओळखण लागग्या। दूसरै लोगां नै पूछ-पूछ'र इण तरै घणा लोग देवी दयाल जी नै आज "किसना देवी रो बाप" रै नांव सूं ओळखण लागग्या। केई जणा देवी दयाल जी सूं रामा-सामा भी करता। मंगता भिखारी, आज तो सगळा बधाई देवता, बधाई देवण नैं घर सूं आगे भी कांई? मोफत में एक बडे आदमी सूं बात करण रो मौको आवै।

इणी भीड़ में एक जणी आरै सूं सेठ जी रै कांधे माथै हाथ धर्यो। सेठजी लारीनै मुड़्या तो चैरो सैंधो लखायो। फेर झट याद आयग्यो। देवी दयाल जी पगाँ में पड़ग्या— गुरुदेव ! थांरा दरसन आजी थोड़ा ई आ सकै। "गुरुदेव' किसना रा हाथ फेर्‌यो किस्या खाती हा। बोल्या—क्यूं सेठ, कोई हाल है ! "आपरी किरपा सूं हूं सरब सुखी हूं' कैय'र देवी दयाल जी फेर आपै जी रा पग झाल्या।

---

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेर खातर गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर में छपी।